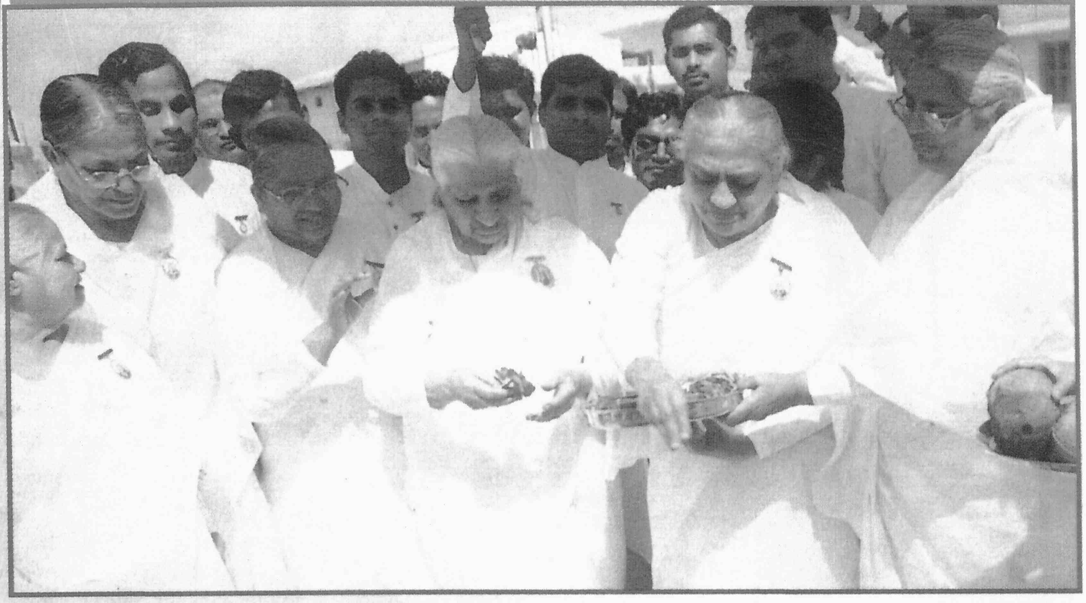
38

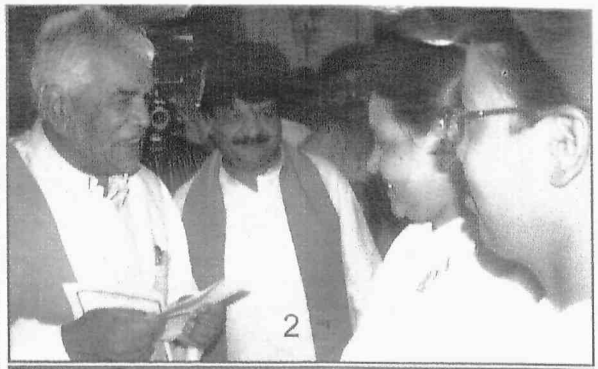
ज्ञानामृत

वर्ष 40, अंक 11, मई 2005, मूल्य 5.00

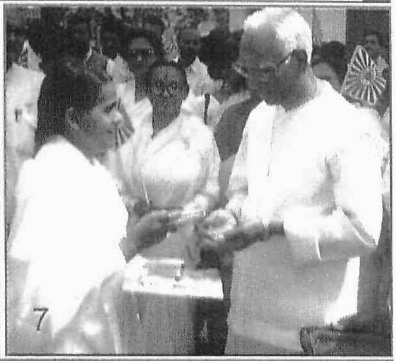




1. ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर (पटौदी रोड)- सोलार प्रोजेक्ट का शिलान्यास दृश्य । भाग ले रहे हैं राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. शुक्ला बहन, ब्र.कु. मुन्नी बहन तथा ब्र.कु. आशा बहन । 2. नई देहली (तरुण एंकलेव-पीतमपुरा)- ओमशान्ति स्टूडियो का उद्घाटन दृश्य । राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, संयुक्त प्रशासिका, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. करुणा भाई, ब्र.कु. रवि भाई तथा ब्र.कु. विवेक भाई दीप प्रज्वलित करते हुए ।





1. **कलख्या-** नेपाल के श्री5 महाराजाधिराज ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव सरकार का पंच कन्याओं द्वारा स्वागत करती हुईं ब्र.कु. रविना बहन । 2. **इन्दौर (ओमशान्ति भवन)-** म.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता बाबूलाल गौर को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. अनीता बहन । साथ में हैं प्रदेश के लोक निर्माण मंत्री भ्राता कैलाश विजयवर्गीय । 3. **सुजानपुर टिहरी (हि.प्र.)-** शिव-दर्शन मेले का उद्घाटन करते हुए हिमाचल के सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री ठाकुर भ्राता कोल सिंह जी । साथ में हैं विधायिका बहन अनिता वर्मा, ब्र.कु. प्रेम बहन तथा अन्य । 4. **गुवाहाटी-** उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता डी. विश्वास तथा ब्र.कु. शीला बहन शिव जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए । 5. **देहली (हरिनगर)-** इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भ्राता प्रो.के.के. अग्रवाल को ईश्वरीय संदेश देती हुईं ब्र.कु. भाग्य बहन । साथ में हैं ब्र.कु. सुन्दरलाल भाई । 6. **मंदसौर-** उच्च न्यायालय खण्डपीठ ग्वालियर के न्यायमूर्ति भ्राता सुभाष जी संवतसर का अभिनन्दन करती हुईं ब्र.कु. समिता बहन । 7. **जोरहाट-** असम कृषि विश्वविद्यालय के उपाचार्य को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. लता बहन । 8. **देहली (मजलिस पार्क)-** देहली राज्य के उद्योग व श्रम मंत्री भ्राता मंगतराम सिंघल को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. अमृता बहन । साथ में हैं ब्र.कु. शंकर भाई । 9. **इम्फाल-** शिव जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए मनिपुर के मंत्री भ्राता गोविन्दास कन्थोईजम, विधायक भ्राता आई.एच.सिंह तथा ब्र.कु. नीलिमा बहन ।

– संजय की कलम से

प्रभु-मिलन

योगाभिलाषी कहते हैं – ''हम आत्मा का परमात्मा से मिलन मनाना चाहते हैं।'' उनकी यह अभिलाषा सच्ची और सर्वश्रेष्ठ है परन्तु इसके साथ ही उन्हें यह भी तो मालूम होना चाहिए कि परमात्मा से आत्मा का क्या सम्बन्ध है।

आज बहुत से लोग एक ओर तो कहते हैं कि उन्हें प्रभु-मिलन की तीव्र इच्छा है और दूसरी ओर कहते हैं कि आत्मा और परमात्मा में तो कोई अन्तर नहीं है बल्कि वे दोनों तो एक हैं। एक ओर तो वे परमात्मा को ''शिव'' मानते हैं और दूसरी ओर ''शिवोऽहम, शिवोऽहम'', का स्मरण करते हैं। इस प्रकार, उनके अपने ही मन्तव्य परस्पर विपरीत हैं। यदि आत्मा ही परमात्मा हैं तो फिर प्रभु-मिलन कैसे? मिलन तो किन्हीं दो में, किसी सम्बन्ध के आधार पर होता है। मिलन का अपना एक विशेष सुख होता है और जब कोई बिछुड़े हुए दो प्रेमी चिरकाल के बाद मिलते हैं तो उनके हृदय गद्गद हो जाते हैं। कई प्रेमियों के नयनों से तो मिलन के क्षणों में प्रेम के मोती झरने लगते हैं और अन्य कई प्रेम से पुलकित हो उठते हैं और उस मिलन के आनन्द में खो जाते हैं।

वास्तव में पारस्परिक सम्बन्ध का बहुत महत्त्व है जिसे कई लोग यथा-रूप नहीं जानते। सम्बन्ध ही संसार के सारे व्यवहार एवं व्यापार का संचालक है। माता अपने पुत्र के साथ अपने सम्बन्ध से उत्पन्न सहज स्नेह अथवा वात्सल्य के कारण ही उसकी सेवा में, उसके पालन-पोषण में लगी रहती है। सखा अपने सखापन के सम्बन्ध के कारण ही अपने दिल का सारा हाल बता देता है जो वह अन्य जनों से गुप्त रखता है। पति, पत्नी के साथ अपने विशिष्ट सम्बन्ध के कारण ही उसे अपना स्नेह-भाजन बनाता है तथा उसके लिए वस्तु-वस्त्र की व्यवस्था करने में जुट जाता है। इन सम्बन्धों के कारण ही मनुष्य सर्दी-गर्मी, निन्दा-स्तुति, भूख-प्यास आदि को सहन करता है। ये सम्बन्ध ही मनुष्य में एक-दूसरे के लिए उत्सर्ग एवं सेवा की भावना पैदा करते हैं।

अत: अध्यात्म में भी यह एक आवश्यक प्रश्न है कि परम-आत्मा के साथ आत्मा का क्या सम्बन्ध है? यह मालूम होने से विषय का महत्त्व ठीक समझ में आता है। हरेक योगाभिलाषी को मालूम होना चहिए कि परमात्मा आत्मा का परमपिता है,

शेष पृष्ठ ......29 पर

अमृत-सूची

फार्म – 4

नियम 8 के अन्तर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान) 307510
2. प्रकाशनावधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्मप्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता: उपरोक्त
4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्मप्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता: उपरोक्त
5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्मप्रकाश
   क्या भारत का नागरिक है? हाँ
   पता : उपरोक्त
6. सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय वि. विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्मप्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्मप्रकाश)
सम्पादक

सम्पादकीय ....

कर्म सिद्धांत

हम सभी जानते हैं कि संसार कर्म प्रधान है। कर्म का फल अपरिहार्य है। शरीर कर्म का साधन है। शरीर की भिन्न-भिन्न इन्द्रियाँ, मन के आदेश अनुसार अपनी-अपनी क्रियाएँ करती हैं। ये क्रियाएँ यदि सुखोत्पादक होती हैं तो व्यक्ति के कर्म-खाते में पुण्य जमा हो जाता है और यदि दुखोत्पादक होती हैं तो व्यक्ति के खाते में पाप जमा हो जाता है। चेतन मानव में विचारों की उत्पति का आधार आत्मा है। आत्मा मस्तक में स्थित है। आत्मा की सोच के अनुसार जो भाव बनता है वह आँखों से झलकता है। यह भाव यदि अधिक वेगवान हो जाए तो मुख द्वारा प्रकट हो जाता है और उससे भी अधिक वेगवान हो जाए तो हाथों आदि के द्वारा कर्म में आ जाता है। कर्म सिद्धान्त के अनुसार, कोई भी बुरा विचार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, तेरा-मेरा, आलस्य, झूठ आदि-आदि पर आधारित) यदि मन में बिजली की कौंध की तरह झलका और गायब हो गया तो पानी पर लकीर जैसा यदि भाव बन कर आँखों से झलक गया तो रेत पर लकीर जैसा, यदि वाणी में आ गया तो पत्थर पर लकीर जैसा और यदि कर्म में आ गया तो लोहे पर लकीर जैसा अमिट प्रभाव छोड़ेगा। यह अमिट प्रभाव जन्म-जन्म आत्मा के साथ रहेगा और बार-बार उसे पाप की तरफ प्रेरित करेगा। परिणामस्वरूप, प्रभाव और अधिक गहरा होता जाएगा और इस प्रकार कुविचार, कुदृष्टि, कुवचन, कुकर्म, कुचलन का यह कभी न सुलझने वाला कुचक्र बन जाएगा।

पवित्रता और योग का बल

जिस प्रकार पाप का आधार कुविचार हैं उसी प्रकार पुण्य का खाता जमा करने का आधार सुविचार हैं जो पवित्रता और ईश्वरीय याद से सम्बन्धित होते हैं। ऐसे विचारों के निर्माण से व्यक्ति में पवित्रता का बल तथा योग का बल जमा हो जाता है। ये दोनों बल संसार रूपी उफनते सागर से पार कराने वाली नाव के दो चप्पुओं की तरह से हैं। इन्हें हम दो पंख भी कह सकते हैं जो आत्मा को निर्बन्धन पंछी बना कर अथवा हल्का, निष्पाप फरिश्ता बना कर स्थूल संसार से ऊपर उड़ा ले जाते हैं। ये ही दोनों बल कैंची के दो फलकों की भाँति भी हैं जो जन्म-जन्म के विकर्मी संस्कारों की रस्सियों को काट कर आत्मा को सम्पूर्णता की चमकीली वेशभूषा से सजा देते हैं।

कौन बनेगा विष्णु ?

यह तो निश्चित है कि जब भी कोई व्यक्ति दु:खदायी कर्म करता है तो वह देहभान रूपी भूत के वशीभूत और विकारों की हथकड़ी में जकड़ा होता है। पाप के संकल्प और कर्म उसकी आत्मा में जमा शक्ति को उसी प्रकार नष्ट करते हैं जैसे घुन (एक कीड़ा) अनाज के दाने को भीतर से खाली और खोखला कर देता है। ऐसा दाना यदि उगाया जाए तो वह ज़मीन से आवश्यक तत्वों को ग्रहण करने में असमर्थ होने के कारण अपने को विकसित नहीं कर सकता। इसी प्रकार आत्मा भी बीज है। विकर्म कर-करके, यदि वह आन्तरिक शक्ति के नाम पर वह दिवालिएपन की स्थिति में पहुँच जाती है तो शरीर छोड़ने के बाद, माता के गर्भ में प्रवेश करके भी, शरीर निर्माण के अनुकूल सभी तत्वों की उपलब्धि होने पर भी अपने शरीर का पूर्ण विकास नहीं कर पाती। इसलिए ऐसी आत्मा लंगड़ापन, अन्धापन, लूलापन लिए या अन्य कोई विकृति लिए जन्म लेती है। प्यारे शिव बाबा ने अपने महावाक्यों में कई बार कहा है कि कुदृष्टि रखने वाले लूले-लंगड़े बन पड़ते हैं। कुदृष्टि तो किसी कुविचार का पहला ही प्रकटीकरण है। यदि कुदृष्टि की परिणति लूले-लंगड़े शरीर के रूप में होती है तो

जो कुदृष्टि के बाद कुवचन, कुकर्म और कुचलन तक पहुँच जाते हैं उनकी सजा कितनी भारी हो सकती है, इसका अन्दाजा सहज ही लगाया जा सकता है। दूसरी तरफ देवताओं के दिव्य शरीरों को भी हमने देखा है, उनके आगे सब नतमस्तक होते हैं। उनकी सुन्दरता और पवित्रता को निहार कर अपने को धन्य मानते हैं। इतने दिव्य, स्वस्थ और सुन्दर शरीर का निर्माण वही आत्मा कर पाती है जिसके संकल्पों से काम, क्रोध ..... आदि विकारों का विष अणु सदृश्य अदृश्य हो गया है। ऐसी आत्मा ही विष्णु के कुल में जन्म लेती है क्योंकि विष्णु का अर्थ ही है विष को अणु की तरह अदृश्य कर समाप्त करने वाला।

कर्मों में राग-द्वेष के काँटे

मानव के दु:ख का कारण कर्म नहीं हैं वरन् कर्मों से जुड़ा हुआ राग-द्वेष है। जो कर्म राग-द्वेष से लिपायमान होकर किए जाते हैं उनका फल क्षणिक सुख और अन्त में दु:ख के रूप में मिलता है। व्यक्ति इस क्षणिक सुख को पाने और दु:ख का निवारण करने के लिए पुन:-पुन: कोल्हू के बैल की तरह कर्म में जुट जाता है परन्तु कर्मों में लगे राग-द्वेष के काटों को न समझ पाने के कारण पुन:-पुन: दु:ख पाता रहता है। इससे परेशान होकर वह कई बार तो कर्म छोड़ कर संन्यासी बन कर संसार से भागने का भी मन बना लेता है। परन्तु समझने योग्य बात यह है कि जिस प्रकार भोजन में यदि कंकर हो और वह हमारा स्वाद बिगाड़े तो उचित है कि कंकर को निकाल दिया जाए, न कि भोजन को फेंका जाए या भोजन न करने का प्रण कर लिया जाए। इसी प्रकार, मोह और नफरत रूपी कंकरों को निकाल कर, आत्मरूप में स्थित होकर कर्म किए जाएँ तो वे ही कर्म पुण्यप्रदायक, शान्तिप्रदायक और सुखप्रदायक बन सकते हैं। उनको करते भी हल्का रहा जा सकता है। स्वयं भी सन्तुष्ट और दूसरों को भी सन्तुष्ट किया जा सकता है। राग-द्वेष रहित कर्म ही संसार को स्वर्ग बना सकते हैं। राग-द्वेष रहित कर्मों का आधार है स्वयं के सत्य स्वरूप की स्मृति और परमात्मा पिता के सत्य स्वरूप की स्मृति। जब कर्म के साथ धर्म का मेल हो जाता है तो कर्म श्रेष्ठ बन जाता है। धर्म का अर्थ है श्रेष्ठ गुणों की धारणा। जब कर्म के साथ श्रेष्ठ धारणाएँ जैसे कि दया, प्रेम, त्याग, शान्ति, विशालता, अनासक्ति आदि जुड़ जाते हैं तो वह कर्म श्रेष्ठ हो जाता है। कर्म सिद्धान्त को समझने के लिए ईश्वरीय विवेक की, सद्विवेक की आवश्यकता है।

कर्म-फल अनिवार्य है

'हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है' इस सिद्धान्त के अनुसार हर कर्म का फल निकलता है। कर्म करने को हम बीज बोना भी कह सकते हैं। जैसे जमीन में बोया बीज यदि वह स्वस्थ है तो अवश्य उगेगा, उसी प्रकार कर्म रूपी बीज भी अवश्य फलता है परन्तु कितनी अवधि लेगा, यह निश्चित नहीं है। जैसे गेहूँ की फसल पकने में 120 दिन और आम के वृक्ष पर फल आने में 6 वर्ष लग जाते हैं। इसी प्रकार, मटर के एक दाने से कई दाने पैदा हो जाते हैं परन्तु गोभी के बीज से एक ही गोभी उत्पन्न होती है फिर पौधा नष्ट हो जाता है। अत:, कर्म रूपी बीज से एक गुणा या सौ गुणा या पदमगुणा फल भी निकल सकता है। सभी कर्मों का फल तुरन्त न मिल सकने के कारण उनका संचय होता रहता है और वे उसी जन्म में नहीं तो बाद के किसी भी जन्म में अपना सिर उठा सकते हैं। उदाहरण के लिए प्रतिदिन किए जाने वाले 500 कर्मों में से 480 ऐसे हो सकते हैं जिनका कि रोज फल मिल जाता है परन्तु 20 कर्म हमारे खाते में संचित हो जाते हैं। हमें उनके जुड़ने का पता नहीं पड़ता पर वे गुप्त रूप में जुड़ जाते हैं। उनका फल दो दिन बाद, दो मास बाद, दो साल बाद या दो

जन्म बाद भी मिल सकता है। कौन-सा कर्म-फल कब सामने आएगा, कैसे सामने आएगा, पता नहीं पड़ेगा। जो आज सामने आया है वह किस कर्म का फल था, यह भी गुप्त है। लेकिन इतना निश्चित है कि भोगे बिना कर्म सामने से हटता नहीं है। एक ही जन्म में हम मन, वचन, कर्म से इतने अधिक कर्म करते हैं कि उसी जन्म में उनका फलित होना सम्भव नहीं होता। उनमें से शुभ कर्म शुभ खाते में, अशुभ कर्म अशुभ खाते में चले जाते हैं। द्वापरयुग के बाद ज्यों-ज्यों देहाभिमान बढ़ता जाता है, पाप कर्मों का खाता बढ़ता जाता है। इसलिए प्यारे बाबा कहते हैं कि आप सभी के सिर पर पापों का कई जन्मों का बोझ है जो एकत्रित होते-होते इस अन्तिम जन्म में बहुत ज्यादा हो गया है। उसे इसी जन्म में समाप्त भी करना है। उसे साथ भी नहीं ले जाना है और भोगने के लिए अन्य जन्म भी नहीं मिलना है। इसलिए चाहे भोग द्वारा चाहे योग द्वारा, चाहे सजा द्वारा उनसे मुक्त होना ही पड़ेगा तभी आत्मा घर में जा सकेगी।

सच्चा सुख – चर्मचक्षु नहीं, ज्ञान-नेत्र पहचानते हैं

किसको, किस कर्म का, कौन-सा फल, कब मिलेगा इस बारे में कोई नहीं जानता सिवाय भगवान के और इस कारण कई लोग इस भ्रान्ति में फँस जाते हैं कि अमुक आदमी बहुत रिश्वत लेता है, बेईमान है, दान भी नहीं करता, ईश्वर को भी याद नहीं करता फिर भी उसके पास कार, बंगला, नौकर, नगदी, जेवर आदि का भण्डार है। परन्तु ये सब चीजें सुख का मापदण्ड नहीं हैं, सुख मन की अवस्था का नाम है। जिसको हम सुखी कह रहे हैं, जिसके पास धन-दौलत, नौकर, चाकर, कोठी हैं, क्या प्रमाण है कि उसका मन भी सुखी है? क्या उस सुख अथवा दु:ख को हमारे चर्मचक्षु देख सकते हैं? नहीं। लेकिन ज्ञान-नेत्र से अर्थात् भीतर के नेत्र से निहारेंगे तो अवश्य ही ऐसे व्यक्ति की मनोदशा बड़ी दयनीय मिलेगी। ऐसे अभागे व्यक्ति को नींद की गोली लेने पर भी, निद्रा देवी अपनी मीठी लोरी देने से मना कर देती है। खाना हजम नहीं होता, पुत्रों की ललचाई नजर सम्पत्ति पर लगी रहती है, पुत्र नहीं तो अन्य कई सम्बन्धी भी वारिस की कतार में खड़े हो जाते हैं। पिता की भरी जेब को हल्का करना अपना परम कर्त्तव्य मान कर बच्चे व्यसनों और विकारों के जहर को बेरोक-टोक पीते रहते हैं। घर, कलह और कोलाहल का अड्डा बन जाता है। कोई किसी से अपनेपन का वास्ता नहीं रखता। घर के लोग, एक-दो से अजनबी बन अपनी-अपनी पहचान और कर्त्तव्य की परिधि भी भुला देते हैं। स्थूल धन से भरपूर होते भी ऐसा व्यक्ति सच्चे प्यार और शान्ति का दरिद्र भिखारी होता है। परन्तु जो ईमानदार, कर्मठ, दयालु, सन्तोषी है उसे नींद का सुख, भोजन का सुख, स्वास्थ्य का सुख, घर में शान्ति और सहनशीलता का सुख तथा सच्चे सुकून और आत्मतुष्टि का हर पल अनुभव होता है। अत: विवेकवान व्यक्ति नींद, भूख उड़ाने वाला नहीं वरन् सुख-चैन देने वाला रास्ता ही अपनाना चाहेगा।

कहा गया है – **'Man is an architect of his own future** (मनुष्य अपने भविष्य का निर्माता खुद है)'। पूर्व के कर्म तो जो हो गए सो हो गए परन्तु नए कर्म करना अभी हमारी पहुँच के अन्दर है। अत: जो हमारे हाथ में है, उसे तो सुधार लें। अब तो ऐसे कर्म ना करें जो उनका फल दु:ख भोगना पड़े। ज्ञानी का पाप कर्म करना माना 100 गुणा और पदमगुणा दण्ड का भागी बनना।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

परोपकार

– ब्रह्माकुमारी शीलू, आबू पर्वत



परोपकार का गुण मानव-जीवन के सभी गुणों का सिरमौर है। जीवन में सभी गुण आ जाएं पर परोपकार का गुण नहीं आए तो अन्य गुण होते हुए भी मानव किसी को सुख नहीं दे पाएगा। परोपकार का अर्थ है – दूसरों के प्रति उपकार करने की भावना। अपना हित करना तो सभी जानते हैं परन्तु दूसरों का हित करना, यह कोई विरला ही जानता है। जितना दूसरों के उपकार में आनन्द मिलता है उतना स्वयं के उपकार में नहीं। एक बार महात्मा गाँधी जी से किसी ने पूछा कि बापू जी, आप को सबसे अधिक सुख का अनुभव कब होता है? बापू जी ने कहा कि जब मैं दूसरों को भोजन खिलाता हूँ ना तब मुझे बहुत सुख अनुभव होता है। फिर बापू जी से पूछा गया कि आप स्वयं भोजन करते हैं तब आपको इतना सुख क्यों नहीं मिलता? बापू जी ने कहा कि तब तो सुख उसकी झोली में चला जाता है जो मुझे भोजन कराता है।

प्रकृति भी परोपकारी है

तो देखिए, परोपकार में कितना आनन्द है। प्रकृति के सभी तत्व अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार ही करते हैं। प्रकृति तो एक खुली पुस्तक की तरह है। वो मूक होते हुए भी परोपकार की शिक्षा देती है। सूर्य सुबह से शाम तक सबको प्रकाश देने का ही परोपकार करता है। चन्द्रमा अपनी शीतल चाँदनी सदा औरों पर बरसाता रहता है। वृक्ष अपना फल देकर कइयों की भूख मिटाते हैं। नदी शीतल जल देकर सबको तृप्त करती है। पहाड़ और धरती खनिज पदार्थ देकर सबको सन्तुष्ट करते हैं। परोपकार सभी धर्मों से बड़ा धर्म है। धर्म अर्थात् जो धारण किया जाए। परोपकार का गुण अगर धारण किया जाए तो इससे बड़ा धर्म क्या होगा? परोपकार सभी व्रतों से बड़ा व्रत है! व्रत अर्थात् प्रतिज्ञा। जिसने यह निश्चय कर लिया कि उसे परोपकार ही करना है तो इससे बड़ी प्रतिज्ञा क्या होगी। परोपकार ही सभी उपदेशों का सार है।

सच्चा सुख देना ही परोपकार है

परोपकार, त्याग की भावना से उत्पन्न होता है। यही गुण मानव-जीवन के महत्त्व को बढ़ाता है। हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार कानों की शोभा कुण्डल पहनने से नहीं, ज्ञान श्रवण से है; हाथ की शोभा स्वर्ण कंगन पहनने से नहीं लेकिन दान करने से है; उसी प्रकार, महान व्यक्ति की शोभा परोपकार से है, केवल चन्दन लगाने से नहीं। परोपकार के कारण ही तो यह पृथ्वी टिकी हुई है। जिस-जिस कार्य को जो भी व्यक्ति जानते हैं वे केवल अपने लिए ही करें तो धरती पर जीना मुश्किल हो जाए। सबके अन्दर अगर सुख देने की भावना आ जाए तो संसार कितना सुखी बन जाए। सभी देवता बन जाएं। आज सुख देने की शिक्षा तो सभी देते हैं लेकिन स्वयं दूसरों को कितना सुख दे पाते हैं? मन में बहुत महत्त्वाकांक्षाएं हैं, इच्छाएं हैं, जो परोपकारी बनने नहीं देती। इसलिए अगर परोपकारी बनना चाहते हैं तो इच्छाओं को खत्म करो। संतोष का गुण धारण करो। महत्त्वाकांक्षी मत बनो। सेवा करने की लगन धारण करो। स्वार्थ को छोड़ परमार्थ को अपनाओ। अब कई लोग सोचते हैं कि परोपकारी होने के लिए तो धनवान होने की आवश्यकता है। अगर मेरे पास धन नहीं है तो मैं दूसरों को दान क्या करूँ? **लेकिन परोपकार का अर्थ इतना ही नहीं है कि हम केवल धन ही**

दान करें। एक निर्धन व्यक्ति भी परोपकारी बन सकता है। इसके लिए केवल विचारों रूपी श्रेष्ठ धन चाहिए। तन की शक्ति रूपी धन चाहिए। शुद्ध वाणी का धन चाहिए। ये भी सम्पत्ति हैं।

विशेषताएँ बाँटने से बढ़ती हैं

परोपकारी औरों को सुख देता है फिर चाहे वह मन से, वचन से, कर्म से, विशेषताओं से, कला से, ज्ञान से, कैसे भी सुख दे। किसी भी प्रकार से सच्चा सुख देना ही परोपकार है। सुख देने वाले के जीवन में स्वत: सुख आता है, सुख पाने के लिए उसको प्रयत्न नहीं करना पड़ता है। उसे तो केवल परोपकारी बनने का प्रयत्न करना पड़ता है। **सुख तो परोपकार का फल है। इसीलिए कहा गया है– तू कर्म किए जा, फल की चिन्ता मत कर। अगर परोपकार का कर्म हम करते जाएंगे तो भगवान अवश्य उसका फल देगा। आपका श्रेष्ठ कर्म कभी निष्फल नहीं होगा। लेकिन यह जरूरी है कि निष्कामी बनकर कर्म करें। अगर कामना सहित कर्म होगा तो वह कर्म परोपकार नहीं कहा जाएगा। परोपकार के लिए कहा गया है कि गुप्त दान होना चाहिए। गुप्त दान ही महाकल्याण है। दायां हाथ दान करे तो बायें को पता न चले।** लेकिन आज की दुनिया में गुप्तदान के महत्त्व को कोई नहीं जानता। मनुष्य यही समझता है कि अगर मान मिलेगा, शान होगी, महिमा होगी तो दान करूंगा। ये सब नहीं मिलेंगे तो दान नहीं करूंगा। अगर कोई मान, शान की इच्छा रखकर दान करता है तो वह तो स्वार्थी हुआ, परोपकारी नहीं। अगर मनुष्य अपने लिए ही जीता है तो मानो वह जीवन पशु समान है। कहा गया है कि —

पशु प्रकृति है
जो आप-आप ही चरे।
मनुष्य है वही
जो मनुष्य के लिए मरे।।

अपने लिए किया तो कौन-सी बड़ी बात की। औरों के लिए किया तो बड़ी बात मानी जाएगी। परोपकार रहित जीवन खजूर की तरह है। खजूर के लिए कहा गया है —

बड़ा हुआ तो क्या हुआ
जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं,
फल लागे अति दूर।

यदि हम अपने गुणों का सदुपयोग करते हैं, विशेषताओं को सेवा में लगाते हैं तो वे कम नहीं होंगी बल्कि बढ़ेंगी क्योंकि कहा गया है –"धन दिए धन न घटे।" वो कौन-सा धन है जो देने से बढ़ता है। अवश्य अपनी विशेषताओं का, गुणों का, शक्तियों का, श्रेष्ठ संकल्पों का, ज्ञान-युक्त वाणी का धन है। यह धन जितना हम बांटते हैं उतना बढ़ता जाता है। आजकल के युग में परोपकार का पाठ और भी आवश्यक हो गया है क्योंकि अधिकतर लोग दूसरों की चिन्ता ना करके अपने ही स्वार्थ में लगे हुए हैं। और ऐसा लगता है जैसे वही उनका धर्म बन गया है। इसीलिए हे मानव! अपने सच्चे धर्म को पहचानो, अपने कर्मों को पहचानो, जो तुम्हें प्राप्त है वह औरों को बांटो।

परोपकार अर्थात् स्वावलम्बी बनाना

दधीची ऋषि के लिए कहा जाता है कि उसने अपनी हड्डियाँ गला दीं – देवताओं की रक्षा के लिए। क्या हम थोड़ी-सी भी सेवा नहीं कर सकते अन्य आत्माओं की? दत्तात्रेय ऋषि ने 24 गुरु किए, जड़-चेतन को अपना गुरु बनाया। क्या हम भी इस प्रकार के संकल्प करके सबसे गुण नहीं ले सकते? कभी भी किसी की बददुआ नहीं लेनी है, ये भी एक लक्ष्य रखना जरूरी है। अगर कोई दुआ नहीं देता तो कोई बात नहीं, हम भलाई करते जाएँ, पर कोई बददुआ न दे, क्योंकि बददुआ का भी बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। हम ऐसा कर्म ही क्यों करें जो किसी की बददुआ के पात्र बन जाएं। दुआ लेने के लिए हृदय की विशालता चाहिए। स्वार्थ रहित कर्म चाहिएँ। नि:स्वार्थ भावना चाहिए। बस मुझे देना

है। जो कुछ मेरे पास है, वह मुझे औरों को देना है, इस संकल्प से शक्ति और भी बढ़ जाती है। अगर मेरे पास दो रोटी हैं तो मैं दूसरे को एक रोटी खिला सकूँ, इतना हृदय विशाल हो। हाँ, यह कई बार महसूस होता है कि दूसरे संतुष्ट होते ही नहीं हैं। हम उन्हें कितना भी देते हैं फिर भी संतुष्ट नहीं होते हैं, ये रहा उनका हिसाब-किताब और उनके कर्म। यह ज़रूरी नहीं कि मैं व्यक्ति को पूर्ण संतुष्ट कर ही पाऊंगा। लेकिन परोपकार की भावना होगी तो 100 प्रतिशत ना सही, 95 प्रतिशत तो हम संतुष्ट कर ही पाएंगे। हो सकता है कि कोई स्वार्थी हो। स्वार्थ के कारण संतुष्ट ना भी हो। **यह भी हमें देखना है कि मेरी भलाई से किसी की बुराई तो नहीं होती है। मैं किसी पर परोपकार करने जा रहा हूँ और वह व्यक्ति आलसी बनता जा रहा है, यह भी परोपकार नहीं। अगर किसी का स्वार्थ मेरे परोपकार से बढ़ रहा है तो मेरा कर्म परोपकार नहीं है। यह तो और ही नुकसान करेगा। मुझे दूसरे को स्वावलम्बी बनाना है। वास्तव में परोपकार इसी को कहेंगे।**

अगर मेरे पास कुछ है तो अवश्य यह मेरे श्रेष्ठ कर्म का भाग्य है। वस्तुएं ऐसे नहीं आईं, ये श्रेष्ठ भाग्य के स्वरूप मेरे सामने आई हैं। अगर मैं इस भाग्य को बढ़ाना चाहता हूँ तो मेरा कर्त्तव्य है कि जो मेरे पास उपलब्ध है, उसका सदुपयोग करूँ। जितना इसका सदुपयोग करूँगा, उतना ही ये सारी प्राप्तियाँ बढ़ती जाएंगी। **परोपकार करने से ही मनुष्य देवता बनता है। देवता किसे कहते हैं? देवता का अर्थ है – देने वाला। तो जीवन को सार्थक बनाने के लिए, श्रेष्ठ जीवन का अनुभव कीजिए, परोपकार का गुण धारण कीजिए। यही सच्चा धर्म है, यही सच्चा व्रत है, यही जीवन का सार है। अगर इसको धारण कर लिया तो जीवन धन्य हो जाएगा।**

❑❑

आत्म-कल्याण करें

– भागवत प्रसाद पाण्डेय, गोंडखाम्ही, छत्तीसगढ़

राजयोग का पथ प्रशस्त है चलें, आत्म कल्याण करें।
परमस्नेही शिवबाबा की श्रीमत का सम्मान करें।।
बीत रही कलियुगी निशा, स्वर्णिम प्रभात आने वाला,
मंगलमय आरुणोदय का फैलेगा सात्विक उजियाला,
ओम् शान्ति का उच्चारण कर सतयुग का आह्वान करें।
राजयोग का पथ.....
सिसक रहा संसार कष्ट से, भय से, हिंसाचारों से,
है तनाव से भरी जिंदगी, हृदय भरा चीत्कारों से,
मुक्ति मिलेगी तब, जब आत्मा की पहचान करें।
राजयोग का पथ.....
शांति-प्रेम-आनन्द-ज्ञान-सुख, हैं स्वाभाविक गुण मेरे,
मैं पावन आत्मा हूँ, तब क्यों दुःख-दीनता के घेरे?
योग-क्षेम जो वहन करे, उस परमपिता का ध्यान धरें।
राजयोग का पथ.....
हमें बुलाती परमपिता की वाणी मधुर दुलार भरी,
आओ, झांके अंतर्मन में, जहाँ स्वर्ण किरणें बिखरी,
परमात्मा शिव के पावन यश का आओ हम गान करें।
राजयोग का पथ.....

▲▲

क्रोध है – विनाशकारी शत्रु

– ब्रह्माकुमार बिरादर, हैदराबाद

हम बार-बार संकल्प करते हैं कि क्रोध नहीं करेंगे परन्तु अपने पर नियन्त्रण का अभाव होने के कारण फिर से क्रोध कर बैठते हैं। क्रोध से इंसान की बुद्धि क्षीण हो जाती है, स्मरण-शक्ति समाप्त हो जाती है। जब गुस्सा आता है तो श्वास की गति तेज हो जाती है, पूरा शरीर कांपने लगता है, नथुने फूल जाते हैं, भृकुटि तन जाती है, मुट्ठियाँ कस जाती हैं, दांत स्वत: पिसने प्रारम्भ हो जाते हैं। क्रोध में इंसान की मुस्कराहट समाप्त हो जाती है। जब तक मुस्कराते रहेंगे, तब तक क्रोध हावी नहीं होगा। क्रोधी व्यक्ति कभी मुस्करा नहीं सकता। यदि वह मुस्कराने की कोशिश करे भी तो उसकी मुस्कराहट में राक्षस दिखाई देता है क्योंकि अंदर क्रोध रूपी राक्षस बैठा है। क्रोध प्रकट होने पर व्यक्ति अपने ऊपर काबू नहीं रख पाता।

दुर्गुणों और दोषों पर भी क्रोध करना उचित नहीं है परन्तु यदि बिना बात ही क्रोध हो तो यह महाविनाशकारी शत्रु से कम नहीं होता है। क्रोध आने पर मन अनियंत्रित हो जाता है। जैसे अनियंत्रित अग्नि विनाश करती है वैसे ही अनियंत्रित मन भी विनाश करता है। अत: मन को काबू में रखो, नहीं तो दुनिया आप को काबू में कर लेगी। उसके बाद पछताते रह जाओगे। कहा जाता है कि क्रोध हमेशा मूर्खता से शुरू होता है और पश्चाताप पर खत्म होता है। जैसे ही क्रोध की पहली चिंगारी आपके अंदर उठे और वह मर्यादा से बाहर जाने की कोशिश करे, तभी उस पर नियंत्रण कर लेना चाहिए। नहीं तो क्रोध पूरी फौज लेकर आएगा और बहुत भारी पड़ेगा। क्रोध जब भी आता है, पूरे परिवार के साथ आता है। उसके साथ ज़िद्द ज़रूर आती है। ज़िद्द क्रोध की बहन है। दोनों भाई-बहन आते हैं। जब आदमी क्रोधी भी हो और ज़िद्दी भी हो तो वह मानता नहीं है। लोग उसे कितना भी समझाएं कि भाई, छोड़ो, इधर आ जाओ, यहाँ बैठो हमारे पास, क्यों सामना करते हो, बात बिगड़ जाएगी। परन्तु वह कहता है कि क्यों इधर आऊँ, आज इसका इलाज करके ही छोडूंगा। तो जिद्द के ही बलबूते पर वह आगे बढ़ता है। क्रोध जब भयंकर रूप धारण कर लेता है तो इंसान के अन्दर क्रोध की पत्नी हिंसा भी आ जाती है। क्रोध अपनी पत्नी को देखकर और अधिक आपे से बाहर हो जाता है। तब परिणाम होता है–खून-खराबा। इसके साथ में निंदा, चुगली, ईर्ष्या-द्वेष और वैर-विरोध भी बाहर निकल आते हैं। ये क्रोध के बेटे-बेटियाँ हैं। यदि बाप लड़ रहा हो तो संतान भी सहयोग के लिए आगे बढ़ती है। अहंकार क्रोध का बड़ा भाई है। अहंकार पर चोट लगने पर छोटा भाई क्रोध तुरन्त बाहर आ जाता है।

क्रोधी व्यक्ति ज्यादातर दुबले-पतले ही नजर आते हैं। उनकी हड्डियाँ कीर्तन कर रही होती हैं। उनकी पूरी की पूरी शक्ति क्रोध की भेंट चढ़ जाती है केवल शरीर का ढांचा ही शेष रह जाता है। जब क्रोध में आकर व्यक्ति पागल हो जाता है तो बोलते समय उसे होश ही नहीं रहता, अन्दर से अपशब्द ही निकलते हैं। जीभ लड़खड़ाने लगती है, भूकंप की तरह कांपने लग जाती है। क्रोध के समय शरीर के अन्दर विष उत्पन्न हो जाता है। एक सत्य घटना है – एक गाँव में दो महिलाएं आपस में लड़ रही थीं। उनमें से एक ही क्रोधित होकर कांप रही थीं। एक माता का 11 मास का बच्चा घर में बहुत रो रहा था। आस-पास वाली महिलाओं ने उसे समझाया और घर ले आईं। उसने बच्चे को स्तनपान कराया। थोड़े समय के बाद बच्चा मर गया क्योंकि क्रोध से उत्पन्न विष का संचार स्तनपान के द्वारा बच्चे में हो गया था। अत: **क्रोध से बचने**

के लिए ज्यादा-से-ज्यादा प्रकृति के बीच बैठना चाहिए, क्रोध वाले स्थान को तुरंत त्याग देना चाहिए, अन्यत्र जाकर आत्म-शान्ति की अनुभूति करनी चाहिए। खुल कर हँसना चाहिए। भोजन के एक ग्रास को बत्तीस बार चबाकर खाना चाहिए। कार्य हड़बड़ाहट में नहीं करने चाहिएँ। ज्यादा मिर्च-मसाले युक्त और तला हुआ भोजन नहीं करना चाहिए। ज्यादा मीठे या चटपटे पदार्थ भी नुकसानदायक हैं। जो चीजें आपके शरीर के संतुलन और पेट को बिगाड़ती हैं, उनका परित्याग करें। नित्य व्यायाम करें। राजयोग के अभ्यास से क्रोध पर विजय पाने की शक्ति मिलती है। राजयोग का अर्थ है – इन्द्रियों का राजा बनाने वाला योग। इसमें हम आत्मिक रूप में स्थित होकर ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव से बुद्धियोग जोड़ते हैं। इस ईश्वरीय सम्बन्ध के द्वारा दिव्य अनुभूतियाँ तथा अलौकिक प्राप्तियाँ होती हैं, आत्मा अपने पिता से वर्से के रूप में सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम का अनमोल खज़ाना पाकर भरपूर और तृप्त हो जाती है और अपनी हर सूक्ष्म क्रिया-प्रतिक्रिया पर पूर्ण नियन्त्रण बनाए रख सकती है। उसमें रहम भाव उत्पन्न हो जाता है जिससे अहम् और वहम से मुक्ति मिल जाती है।

✦✦

'पत्र' सम्पादक के नाम



अपने महाविद्यालय में एक सहपाठिन के हाथों में मैंने एक बहुत ही अच्छी पत्रिका देखी जिसका नाम था ''ज्ञानामृत''। मैंने पढ़ने के लिए पत्रिका मांगी जिसे पढ़ कर मुझे अमरत्व का ज्ञान हो गया। फरवरी, 2005 की ज्ञानामृत, मेरा पहला आध्यात्मिक उपहार बनी। मैं सही स्थान पर पहुँचकर अपने को खुशनसीब समझती हूँ। मुझे बाबा शिव मिल गए ''ज्ञानामृत'' के द्वारा। इसके लिए बाबा को कोटिश: धन्यवाद जिन्होंने मुझ पर कल्प बाद वरदान के हाथ रखे तथा उन्हें भी धन्यवाद, जिन्होंने मुझे यहाँ तक लाने में कड़ी का काम किया। ज्ञानामृत पढ़कर मुझमें बहुत-सा परिवर्तन हुआ है। सर्वप्रथम तो मैं मांसाहारी से शाकाहारी हो गई हूँ। बोझिल मन अब शुद्धता पाकर बिल्कुल हल्का हो गया है। बुद्धि का ज्ञान-पट जो बंद था, शनै: शनै: खुलता जा रहा है। आप सभी पाठकों से भी मेरी अपेक्षा है कि अंतिम साँस तक इस ज्ञानामृत का रस पान करें।

– सुशीला देवी, सिमडेगा, झारखण्ड

ज्ञानामृत पत्रिका दिल को छू लेती है। इसको पढने की एक ललक-सी रहती है। इसके प्रत्येक लेख में बहुत कुछ जानने, समझने को मिलता है। संजय की कलम और सम्पादकीय बहुत कुछ कह जाते हैं। यह पत्रिका हर घर तक पहुंचे, यही समय की पुकार है और दिन दोगुनी ,रात चौगुनी तरक्की करे, हर समय यही शुभ भावना है। हर आत्मा को इसे पढ़ना व समझना चाहिये। यह पत्रिका प्यासे को अमृत पिलाने का काम करती है। ''प्रसन्नता की चाबी – सकारात्मक सोच'', ''निर्मलता मिटायेगी निर्बलता'', ''बंधनमुक्त'', ''सात आश्चर्य'' आदि लेख दिल को छू गये। इस पत्रिका के बारे में और क्या कहूँ, यह तो संजीवनी के समान है।

– ब्रह्माकुमार सोमवीर, सातरोड़ कलाँ, हिसार(हरियाणा)

मार्च, 2005 की पत्रिका में महिला दिवस का लेख विशेष शक्तिशाली लिखा है। धन्यवाद प्यारे बाबा का जिन्होंने लेखिका की लेखनी को इतना जौहर एवं निर्भयता प्रदान की है। आप यूं ही लिखती रहें। यही शुभकामना है हमारी।

– ब्रह्माकुमार ज्योति भाई, बल्लबगढ़ (हरियाणा)

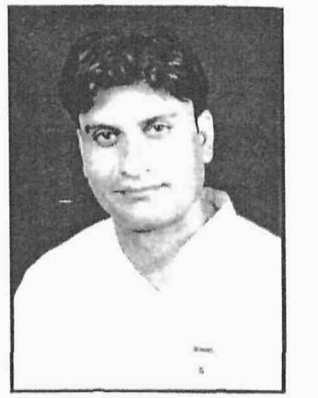
शराब की जगह ज्ञानामृत का प्याला

– ब्रह्माकुमार राजेश, अमरावती (महाराष्ट्र)

मेरा लौकिक जन्म सन् 1972 में महाराष्ट्र के अमरावती जिले में एक धार्मिक परिवार में हुआ जिसमें मेरी पालना खिले हुए फूल समान हँसते-खेलते होती रही। बचपन खेलने-कूदने और विद्यालय की पढ़ाई में चला गया तथा देखते-ही-देखते मैं बड़ा होकर कॉलेज जाने लगा। माता-पिता बहुत खुश थे। उनकी आशाओं को पूर्ण करना मैंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। जीवन बसंत के समान हरा-भरा था लेकिन बसंत के बाद आने वाली पतझड़ का मुझे ज़रा भी अहसास न था। मेरी सारी भविष्य-योजना उस समय धूल-धुसरित हो गई जब मैं गलत दोस्तों के संग में आ गया, बुरे व्यसनों में फँसने लगा और कुसंग का रंग मुझ पर जमने लगा। धीरे-धीरे व्यसनों की आदत इतनी बढ़ती गई कि कम करने के सब प्रयास व्यर्थ होने लगे।

शराब बनी जीवन संगिनी

पहली गन्दी आदत मुझे शराब पीने की लगी। शुरू-शुरू में मैं थोड़ी पीता था और घर में किसी को भी पीने की आदत न होने के कारण मैं परिवार के सदस्यों से डरता भी था। पर थोड़ी-थोड़ी करते-करते आदत इतनी विकराल बन गई कि उससे बाहर निकलने का रास्ता ही मुझे नजर नहीं आता था। **'शराब की दुकान' और 'बीयर बार' जैसे मेरे घर और शराब मेरी जीवनसंगिनी बन गई।** दिन में मैं पानी कम और शराब ही ज्यादा पीता था। शराब के नशे में मेरा और मेरे साथियों का एक ही नारा था – "ना इज्जत की चिंता और ना फिकर अपमान की, जय बोलो शराब की, जय बोलो .....।" एक बुराई, अनगिनत बुराइयों के आने का दरवाजा खोल देती है। शराब की गन्दी आदत ने भी ऐसा ही किया। मुझे तम्बाकू, जुआ, गांजा, सिगरेट आदि की भी लत लग गई। मुझे घर से पैसे तो नहीं मिलते थे लेकिन दोस्तों से लेकर उनके संग मिल कर कुत्सित इच्छाएँ पूरी होती थीं। मैंने एक इंजीनियर के साथ देख-रेख करने का छोटा-सा कार्य प्रारम्भ किया, उससे थोड़े पैसे मिलने लगे और हमारा गन्दगी खाने-पीने का बंदोबस्त होने लगा। कार्यस्थल पर भी शराब मेरे साथ रहती थी। शराब के नशे में झगड़ा करना, गालियाँ देना मेरा स्वभाव बन गया था। कुसंग का रंग इतना बढ़ा कि हम दादागिरी करने वालों का एक बदनाम संगठन बन



गया। शराब के नशे में गटर में गिरना, सड़क पर लेटना, ऑटो-रिक्शा में सोना आदि सब होता था। एक बार कार्यस्थल पर मेरा किसी से झगड़ा हो गया और नशे में मैंने उसको गालियाँ देनी शुरू कर दीं। इस पर उसने गुस्से में आकर मेरे सिर पर ऐसा फावड़ा मारा कि मुझे रात भर होश ही नहीं आया। समझ लीजिए कि मेरा जीवन पूरी तरह बंजर बन गया था।

मेरे ऐसे दुर्व्यवहार के कारण मेरे हँसते-खेलते परिवार में जैसे वीरानी छा गई और सुख के फूलों के स्थान पर दु:ख के काँटों की झाड़ियाँ उगने लगीं। परिवार के सभी सदस्य उदास और अशान्त रहने लगे। शराब के कारण मुझ पर कर्जा भी बहुत चढ़ गया था। जब मैं अकेला होता था तब कभी-कभी इस सारी

स्थिति पर सोचता था और मुझे बहुत दु:ख भी होता था। परन्तु शराब के अधीन इतना हो चुका था कि उसके बिना नहीं रह सकता था। शराब पीने की मेरी आदत के कारण सारा मुहल्ला मुझसे परेशान रहने लगा था और कोई भी मुझसे बात करना पसन्द नहीं करता था।

माँ की शुभभावना कभी कम नहीं हुई

मेरी माँ मेरे अच्छे होने की भगवान से प्रार्थना करती, उपवास, नेम, व्रत रखती। उसका यह श्रद्धा भाव देख कर मुझे कभी-कभी महसूसता आती थी कि नशे के कारण मेरा बहुत नुकसान हो रहा है। मेरे भक्तिभाव के संस्कार भी कभी-कभी प्रकट होते थे और मैं अमरावती के प्रसिद्ध 'अम्बादेवी' के मन्दिर में नवरात्रि के दिन जाता था और प्रार्थना करता था कि मेरा जीवन अच्छा और आदर्श बन जाए और मैं सभी व्यसनों से मुक्त हो जाऊँ पर साथ-साथ यह भी विचार आता था कि आसुरियता की इतनी गर्त में धँसने के बाद निकलना कैसे सम्भव हो सकता है। अन्य भी कई लोग अक्सर कहते रहते थे कि किसी भी कीमत पर इसका परिवर्तन होना सम्भव नहीं है। जब ऐसे विचार मेरे कानों तक पहुँचते थे तो मैं बहुत ही निराश हो जाता था और उस निराशा को भुलाने के लिए पहले से ज्यादा शराब पीना आरम्भ कर देता था। जीवन पूरी तरह आवारा और बेसहारा बन गया था, आशा की एक भी किरण कहीं नजर नहीं आ रही थी, मैं अपने आपको बहुत ही गिरा हुआ अनुभव करने लगा था। परायों की बात छोड़ो, मेरे अपने भी मुझसे तंग आ गए थे और सोचते थे कि यह किसी तरह मर जाए तो अच्छा।

उन्हीं दिनों मेरी माँ 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' में जाने लगी तो उसके जीवन और व्यवहार में काफी परिवर्तन आया। वह पहले से थोड़ी ज्यादा खुश रहने लगी। कभी-कभी मुझे प्यार से आश्रम में चलने को भी कहने लगी लेकिन मैं यह जरूरी नहीं समझता था। क्योंकि मेरे व्यसनों के साथियों में से कोई-न-कोई उसी समय पहुँच जाता और मैं अपनी ही जिन्दगी में फिर मस्त हो जाता। लेकिन मेरी माँ की शुभभावना कम नहीं होती थी, न ही वह थकती थी। उसकी निरन्तर कल्याण कामना मेरे अन्तर्मन को खींचती जरूर थी। वह कहती थी कि एक बार, सिर्फ एक बार आश्रम में चल कर बहन जी से मिल लो। माँ के शब्दों में इतना प्यार और रहम था कि मन सिहर जाता था और मैं सोचता था कि एक बार जाकर देखने वा मिलने में क्या हर्जा है?

जीवन में नवीन सूर्य का उदय

आखिर वह दिन आया जब मेरे वीरान जीवन में नई बहारें आईं, मैं पहली बार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थानीय शाखा में गया और संचालिका बहन से मिला। बहन जी का रूहानियत से भरपूर चेहरा, उनकी रूहानी मीठी वाणी जैसे मन को भा गई। जैसे-जैसे वे मुझे राजयोग और सृष्टि-चक्र के बारे में बताती जा रही थी, मैं धन्य-धन्य अनुभव करता जा रहा था। ऐसे लग रहा था मानो आसमान से फरिश्ता उतर कर मुझे सुना रहा हो और मुझे जीवन श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा दे रहा हो। मैं उनसे और अधिक सुनाने की विनती करता रहा और मन-ही-मन मैंने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की पक्की ठान ली। जीवन में नया सूर्य उदित हुआ, उसकी किरणों से व्यसनों रूपी कीटाणुयों का नाश हुआ उन्हीं दिनों मुझे 'व्यसन मुक्ति शिविर' में मधुबन वरदान भूमि पर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आदरणीया दादीजी का ममता भरा प्यार और दुलार पाकर और आत्मा-परमात्मा का सत्य ज्ञान सुन कर ऐसा लगा जैसे सचमुच मुझे मेरी माँ ही सुना रही है! वहाँ का वातावरण स्वर्ग समान

लगा। भाई-बहनें चलते-फिरते फरिश्ते नजर आए। कैसे वर्णन करूँ उस प्यार का, क्या नाम दूँ!

प्रभु ने गटर से उठा कर गले लगा लिया

वहाँ से लौट कर आया तो बाबा को मैंने शराब, सिगरेट, गांजा, तम्बाकू आदि सब व्यसन दान में दे दिए और जीवन में फिर कभी भी हाथ न लगाने की कसम खा ली। वर्तमान समय मैं सेवाकेन्द्र पर (चार साल से) समर्पित हूँ। प्यारे बाबा का यज्ञ-रथ (गाड़ी), रथवान बन चलाता हूँ। यह प्यारे बाबा की दुआएँ और निमित्त बहन जी की पालना का फल है जो मैं इस मुकाम पर पहुँच पाया हूँ। मेरे अज्ञानकाल में जो लोग मुझसे बात करना भी पसन्द नहीं करते थे, अब वे मुझे आश्रम पर मिलने आते हैं और बहन जी से कहते हैं कि आपने तो कीचड़ में कमल खिला दिया है। लेकिन नम्रता की मूरत दीदी उन्हें भी कहती हैं – यह तो शिव बाबा के असीम प्यार की निशानी है जो यह उनके समान बन रहा है।

आज, जब कभी पुराने लौकिक दिन याद आते हैं तो आँखों में आँसू आते हैं कि कहाँ मैं आवारा और गुण्डागर्दी करने वाला और कहाँ आज प्यारे बाबा ने उपकार करके मुझे कितना बदल दिया है, अपना बना लिया है! इन हाथों से न जाने कितनों को कष्ट पहुँचाया, कितनों को दु:खी किया, कितनों को गालियाँ दी। मेरे इन सभी गुनाहों को न देख कर क्षमा के सागर बाबा ने फिर भी मुझे अपना लिया, कितना उपकार है परम प्यारे पिता का! गटर में गिरने वाले को उठा कर गले से लगा लिया है। निमित्त बहन जी ने भी मुझे भगवान के घर में पनाह दी, स्नेह दिया, दुलार दिया। प्रभु का और निमित्त बहन का दिल से उपकार गाता हूँ। दिल से निकलता है – "किन शब्दों में आपका धन्यवाद करें"।

बर्बाद जीवन आबाद हो गया

मेहरबान प्रभु की मेहरबानी से मैं व्यसनों में नष्ट होते जीवन को ईश्वरीय कार्य में लगा रहा हूँ। विश्व के सभी भाई-बहनों को मैं नम्रता के साथ बताना चाहता हूँ कि सब नशे हैं बेकार सिवाय नारायणी नशे के। इन व्यसनों से समय, संकल्प, धन-सम्पत्ति आदि की कितनी बर्बादी होती है। राजयोग ही जीवन को श्रेष्ठ बनाने की कला है। वक्त की गर्दिश में और शैतान के बहकावे में आकर मैंने जीवन को बर्बादी की ओर मोड़ा था परन्तु करुणामय प्रभु की कमाल है जो हाथों में आज शराब की जगह ज्ञानामृत का प्याला है। बहन जी के साथ सेवार्थ जाता हूँ और लोगों को अपना अनुभव सुनाता हूँ तो सब आश्चर्यचकित होते हैं और कहते हैं कि यह कैसे सम्भव हुआ है? मैं कहता हूँ कि राजयोग से ही असम्भव सम्भव होता है। अब तो यही इच्छा है कि समय की रफ्तार को जान कर, प्यारे बापदादा की आशाओं को पूर्ण करने के लिए फ़रिश्ता बन, अनेकों को फ़रिश्ता बनने की युक्ति बताऊँ और अपने कुल को रोशन करूँ। अब वह दिन दूर नहीं जबकि सतयुग आया कि आया। अब गफलत का समय नहीं, उड़ने का समय है, उड़ते रहो, उड़ाते रहो।

सुख सागर भगवान ने मुझे इतना अच्छा पथ दिखा दिया है। उस पर पथिक बन मैं चल रहा हूँ और चलता ही रहूँगा। इसी राह पर सभी रूहों को राहत मिलेगी। अभी मेरा दु:खी-अशान्त परिवार बहुत ही खुश है, मैं बहुत-बहुत खुश हूँ, अन्य सभी भी देख कर बहुत खुश होते हैं। शुक्रिया बाबा! भगवान से मिला हुआ यह नया जन्म उसकी अमानत है। कभी-कभार व्यसनी जीवन के पुराने साथी व्यसन से सम्बन्धित चीज़ें मेरे ही सामने फेंक देते हैं अर्थात् मेरा इतना आदर करते हैं। ओहो भगवान, आपने मुझे क्या से क्या बना दिया!

▲▲

बड़ा कौन

– ब्रह्माकुमारी राजिन्दर कौर, रतिया (हरियाणा)

समाज में रहते हुए, दूसरों की तुलना में स्वयं को बड़ा दिखाने की और कहलवाने की प्रवृत्ति अक्सर बहुत-से लोगों में पाई जाती है। बहुत कम लोग इस मनोवृत्ति से मुक्त हो पाते हैं। आज के समाज में यह लालसा खेतों में पनपने वाली खरपतवार की तरह पनप रही है। इस धुन के सवार लोग तरह-तरह के रास्ते भी ढूँढ़ते रहते हैं। हर वर्ष नए-नए चेहरे समाज में प्रत्यक्ष होते हैं, जैसे कि कोई नेता, कोई अभिनेता, कोई कलाकार तो कोई मिस इण्डिया आदि-आदि। बड़ा बनने की भावना मन में पालना अच्छी बात है परन्तु सस्ते मार्ग से बड़ा बनने की धुन कभी-कभी बहुत महँगी भी पड़ जाती है। सच्चे अर्थों में बड़ा बनने की दिवानगी अनेक प्रतिभाओं को जन्म देती है, साधारण दिखने वाले लागों को विशेष बना देती है। इस धुन का धनी पर्वत की चोटियाँ पार कर सकता है, गगन में उड़ सकता है और सागर की गहराइयों को नाप सकता है।

बड़ा अर्थात् बड़ी जिम्मेवारी वाला

आज के युग में 'बड़ा' उसी को माना जाने लगा है जिनके पास सत्ता, शोहरत तथा ऐशो-आराम के सभी साधन हैं या जो ऊँचे ओहदों पर बैठे हैं। अक्सर लोगों को कहते सुना जाता है कि वे तो 'बड़े लोग' हैं, उनका क्या कहना? आजकल बड़ों की धाक है, बड़ों की पहुँच है, बड़ों का राज्य है, बड़ों का बोलबाला है, बड़ों की सरकार है, बड़ों की पूछ है, गरीबों को कौन पूछता है? प्रश्न उठता है कि क्या सत्तावान, धनवान और बलवान लोग ही बड़े लोग होते हैं। यदि यही लोग बड़े होते हैं तो फिर धन तो लुटेरों के पास भी होता है। सत्ता तो हिटलर जैसे क्रूर शासक के पास भी थी। सत्ता, शान, शोहरत, पैसे और प्रसिद्धि पर टिका हुआ 'बड़ापन' ऐसे ही है जैसे सूर्य अस्त होते ही दिन काली रात में बदल जाता है और बुढ़ापा आते ही यौवन ढल जाता है। तो फिर "बड़ा कौन?" वास्तव में बड़ा माना बड़ी जिम्मेवारी वाला। घर हो या दफ्तर, सभा हो या संस्थान, जो बड़े का दर्जा पा लेता है वह हर कार्य को, परिवार को, संस्था या समाज को सुचारू रूप से चलाने वाला जिम्मेवार व्यक्ति बन जाता है। बड़ा वह नहीं होता जो सत्ता पाकर दूसरों पर धोंस जमाए, आदेश चलाए या औरों का तिरस्कार करे या उन्हें भयभीत करे।

एक बार एक मन्दिर के ट्रस्ट का प्रधान अपनी गाड़ी में अचानक मन्दिर आया। पुजारी किसी काम से दूसरी जगह गए हुए थे। थोड़ी देर में पुजारी जी आए तो प्रधान जी उन पर खूब बरसे। अगले वर्ष मन्दिर के ट्रस्ट के प्रधान जी बदल दिए गए। नए प्रधान जी एक संध्या टहलते-टहलते मन्दिर की तरफ चले गए। उसने देखा कि मन्दिर के द्वार के पास कुछ ईंटें पड़ी हैं। उसने ईंटें उठाई और कोने में रख दीं। जब पुजारी जी को पता चला कि ईंटें स्वयं प्रधान जी ने उठा कर कोने में रखी हैं तो उनका मन प्रधान जी के लिए आदर से भर गया। सत्ता की गरिमा गुणवान व्यक्तियों से और भी बढ़ जाती है।

इतिहास में महाराजा रणजीत सिंह की दया, उदारता एक मिसाल है। एक बार महाराजा रणजीत सिंह के राज्य में अकाल पड़ गया, लोग दाने-दाने को तरसने लगे, महाराजा ने ऐलान करवा दिया कि सरकारी अन्न भण्डार में से जिसको जितना चाहिए ले जा सकता है। सभी लोग अपनी-अपनी इच्छा अनुसार अन्न लेकर जाने लगे। संध्या के समय एक गरीब, बीमार, दुबला-पतला, बूढ़ा बाबा आया। उसने अन्न का गट्ठर बाँध लिया पर उठा न सका। उस समय महाराजा रणजीत सिंह जी वेष

बदल कर घूम रहे थे। उन्होंने बूढ़े बाबा को देखा। वह मदद के लिए लोगों से याचना कर रहा था पर कोई भी उसकी बात नहीं सुन रहा था। यह देख महाराजा ने स्वयं अन्न का गट्ठर उठाया और बूढ़े बाबा के घर छोड़ आया। उसके परिवार के कुछ लोगों ने महाराजा रणजीत सिंह को पहचान लिया। बूढ़ा बाबा तथा वे सभी भयभीत होकर राजा से क्षमा याचना करने लगे। इस पर महाराजा रणजीत सिंह ने कहा कि मैं तो प्रजा का सेवक हूँ। यही मेरा कर्त्तव्य है। अपनी इस दया, करुणा, उदारता और विशाल हृदय के कारण महाराजा रणजीत सिंह लोकप्रिय हो गए। बड़ा वह है जिसे लोग दिल से सम्मान दें, स्नेह दें, दिल में स्थान दें। लोग युगों-युगों तक उसे याद करें। 'बड़ों' की परिभाषा सन्तों की लेखनी से इस प्रकार है –

बड़ा हुआ तो क्या हुआ,
जैसे पेड़ खजूर,
पंथी को छाया नहीं,
फल लागे अति दूर।

इसी तरह गुरवाणी कहती है –

सिम्मल रूख सरहायी,
अति दीर्घ अति मच,
आवे जो पंछी आश कर,
गए निराशा धत।
फल फीके, फूल बकबके,
काम न आवे पत।।

बड़ा वही जो दूसरे को बड़ा माने

जीवन में खजूर की तरह भौतिक ऊँचाइयाँ, भौतिक उपलब्धियाँ पा लेने मात्र से ही बड़ापन नहीं मिलता। यदि आसमान जैसी ऊँचाइयाँ छू कर भी किसी को न सुख और न स्नेह बाँट सके तो वह बड़ापन किस काम का ? भौतिक उपलब्धियाँ पा कर यदि कोई नन्हें पौधे तुलसी की तरह औरों को सुख देता है तो यह सच्चा बड़ापन है। आध्यात्मिक भाषा में 'बड़ापन' माना 'बड़प्पन'। दूसरों को स्नेह, सम्मान देने में ही बड़प्पन है। एक बार एक संत के दो शिष्यों में झगड़ा हो गया। एक शिष्य ने कहा – "मैं बड़ा हूँ क्योंकि मैं विद्वान हूँ, पढ़ा-लिखा हूँ। सारे वेद-शास्त्रों का मैंने अध्ययन किया है।" दूसरे ने कहा – "मैं बड़ा हूँ क्योंकि गुरुकुल में मैं पहले आया हूँ। मैंने गुरु जी की सेवा की है तथा सारे मन्त्रों को सीखा है, मैं अनुभवी हूँ इसलिए मैं बड़ा हूँ।" दोनों गुरु जी के पास फैसला करवाने के लिए गए। गुरु जी ने दोनों की बात सुन कर कहा कि 'बड़ा' वही है जो दूसरे को बड़ा माने। इसके बाद दोनों शिष्य एक-दूसरे को बड़ा मान कर सम्मान देने लगे। नम्रता में ही बड़ापन अर्थात् बड़प्पन है।

बड़ापन बाहरी दिखावे में नहीं है, ना ही अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने में है। धैर्य, अन्तर्मुखता, गम्भीरता, क्षमाशीलता, दया, करुणा, उदारता जैसे दिव्य गुणों को धारण करने में ही बड़ापन है। भगवान इन सभी गुणों का सागर है। इसलिए भगवान को कहा जाता है – 'तू समर्थ बड़ा .....'। सतयुग, त्रेताकाल में हमारे पूर्वज देवी-देवताएँ भी इन सर्वगुणों से सम्पन्न थे इसलिए वे आज भी पूज्य हैं। दिव्यगुणों के आधार पर टिका हुआ बड़ापन युगों-युगों तक दूसरों के लिए जैसे प्रकाश-स्तम्भ बन जाता है। गुणों की साधना से सधा हुआ बड़ापन साधारण मानव को माननीय और संतजनों को पूज्य बना देता है। यदि हम भी देवताओं की तरह अपने इस जीवन को गुणों के अलौकिक आभूषण से सुसज्जित करना चाहते हैं तो हमें स्वयं भगवान द्वारा बताए गए मार्ग पर चल कर राजयोग का अभ्यास करना होगा। केवल राजयोग ही ऐसी विधि है जिसके द्वारा हमारी बुद्धि दिव्य गुणों को धारण कर सकती है। दिव्यगुणों की धारणा से जीवन में सहज ही बड़ापन आ जाता है। तो प्रिय आत्मिक भाइयो व बहनो आइये, हम ईश्वरीय मार्ग पर चल कर इन अलौकिक आभूषणों से स्वयं को सजा कर पूरी वसुंधरा को देवनगरी बना दें।











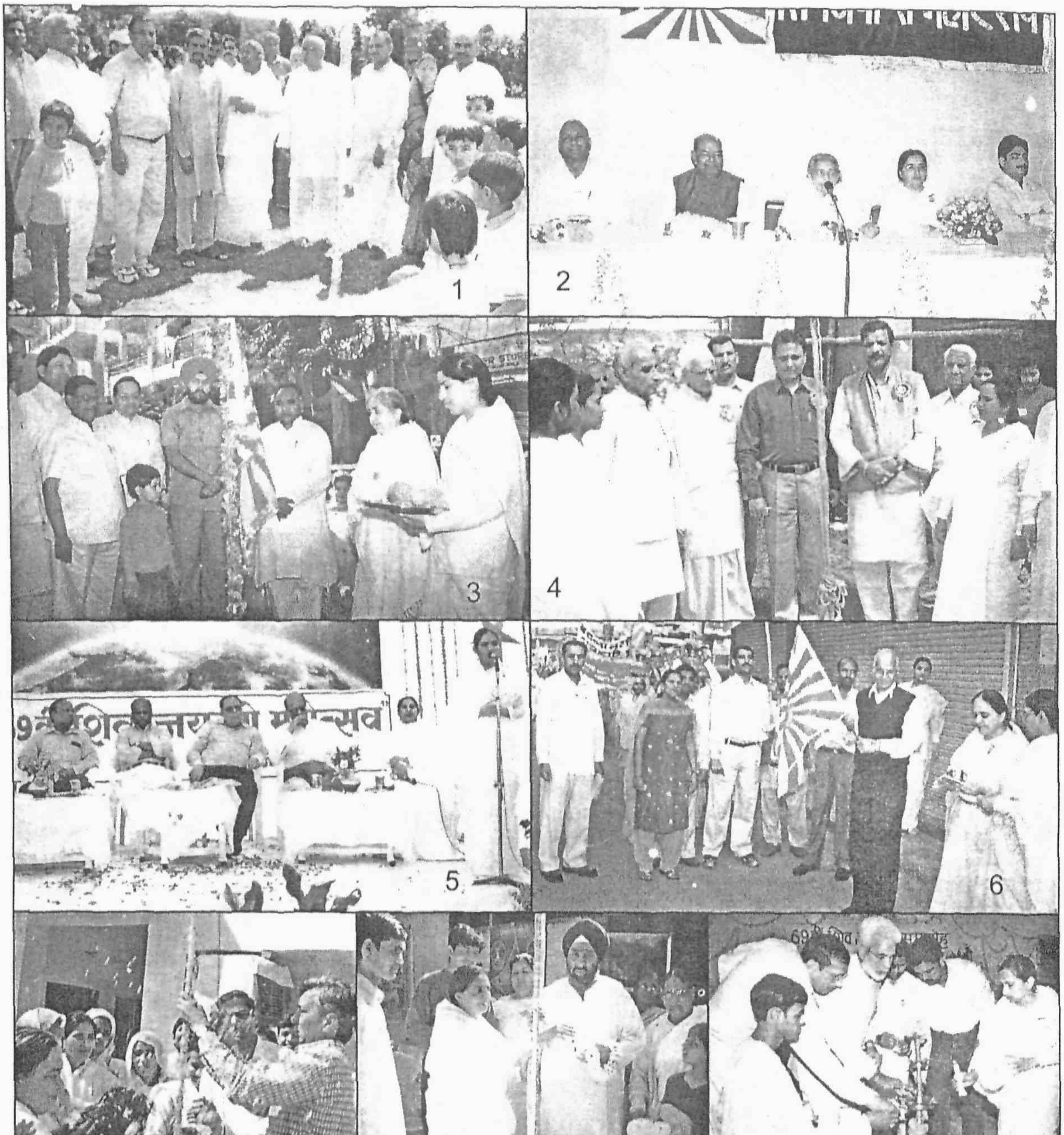






देहली तथा उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय सचित्र समाचार

1. ओ.आर.सी. (पटौदी रोड)- ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर में पानीपत से पधारे प्राचार्य, शिक्षकगण, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. शिवानी बहन, डॉ. भ्राता आर.पी. गुप्ता तथा अन्य स्व-सशक्तिकरण कार्यक्रम के बाद ग्रुप फोटो में । 2. सिद्धार्थ नगर (उ.प्र.)- ज़िलाधिकारी डॉ. भ्राता एल. वेंकेटेश्वर लू तथा पूर्व सिंचाई मंत्री भ्राता धनराज यादव को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. गीता बहन । 3. मेरठ (शास्त्री नगर)- शिव जयन्ति महोत्सव पर बोलते हुए ब्र.कु. बिन्दु बहन । मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. पुष्पा बहन, भ्राता हरभजन सिंह, महानिरीक्षक, मेरठ संभाग, राजयोगिनी दादी देवता जी तथा फ़ादर भ्राता जेसू । 4. दिल्ली (पालम कालोनी)- विधायक भ्राता भुजबल मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुईं ब्र.कु. सरोज बहन व ब्र.कु. पूजा बहन । 5. दिल्ली (शाहदरा)- सुनामी पीड़ित लोगों के लिए आयोजित शान्ति सभा का उद्घाटन करते हुए सर्व धर्मों के विशिष्ट व्यक्ति, ब्र.कु. प्रेम बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन, दादी कमलमणि जी तथा अन्य । 6. भदोही (ज्ञानपुर)- आध्यात्मिक एवं व्यसन-मुक्ति प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता रंगनाथ मिश्रा, पूर्व गृहराज्य मंत्री, उ.प्र. । साथ में ब्र.कु. विजयलक्ष्मी बहन तथा अन्य खड़े हैं । 7. ग़ाज़ियाबाद (कविनगर)- आध्यात्मिक संग्रहालय देखने के पश्चात् जेलर भ्राता राजेश केसरवानी, आर.टी.ओ. भ्राता अनिल अग्रवाल, एस.पी. भ्राता घई, आई.जी. पुलिस भ्राता गोपाल गुप्ता, ब्र.कु. सुतीश, राजेश बहन तथा सुनीता के साथ ग्रुप फोटो में । 8. हाथरस (आनन्दपुरी)- शिव ध्वजारोहण के पश्चात् विधायक भ्राता मुकुल उपाध्याय तथा अध्यक्ष भ्राता हरिशंकर शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुईं ब्र.कु. हेमलता बहन, ब्र.कु. शान्ता बहन तथा ब्र.कु. मीना बहन ।



देहली तथा उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय सचित्र समाचार

1. मानेसर (दिल्ली)- शिव ध्वजारोहण पर पूर्व मंत्री भ्राता कैलाश शर्मा, विधायक भ्राता राधेश्याम शर्मा, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आशा बहन, भ्राता आर.डी.गुप्ता, आई.पी.एस. भ्राता सुभाष यादव, जन जागृति मंच अध्यक्ष भ्राता रणधीर सिंह तथा अन्य उपस्थित हैं । 2. दिल्ली (वज़ीरपुर)- आध्यात्मिक कार्यक्रम में शिवरात्रि का महत्त्व समझाती हुईं ब्र.कु. राज बहन । साथ में मंच पर विराजमान हैं विधायक भ्राता माँगेराम गर्ग, ब्र.कु. विद्यासागर, ब्र.कु. पूनम बहन तथा जितेन्द्र भाई । 3. दिल्ली (दिलशाद कालोनी)- शिव ध्वजारोहण के पश्चात् विधायक भ्राता वीर सिंह धिगान, समाज सेवक भ्राता जितेन्द्र सिंह शन्टी, ब्र.कु. जयप्रकाश भाई, डी.के. जैन, ब्र.कु. इन्द्रा बहन तथा ब्र.कु. सरिता बहन ईश्वरीय स्मृति में खड़े हैं । 4. मथुरा (प्रह्लाद नगर)- झण्डारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में खड़े हैं ब्र.कु. सुनील बहन, जेल अधीक्षक भ्राता राधाकृष्ण, विधायक भ्राता भगवान सिंह तथा अन्य । 5. लखनऊ (गोमती नगर)- शिव जयन्ती महोत्सव के अवसर पर मंच पर विराजमान हैं एन.बी.आर.आई. के निदेशक डॉ. भ्राता पुष्पांगदन, आई.टी.आर.सी. के डॉ. भ्राता पी.के. सेठ, मुख्य सचिव समाज कल्याण विभाग भ्राता आर. रमणि एवं ब्र.कु. राधा बहन । 6. नई दिल्ली (इन्द्रपुरी)- प्रभात फेरी का शुभारम्भ करते हुए विधायक भ्राता पूर्णचन्द योगी । साथ में ब्र.कु. अनुसूईया बहन तथा अन्य । 7. नई दिल्ली (महिपालपुर)- शिव ध्वजारोहण करते हुए विधायक भ्राता विजय लोचव, ब्र.कु. अनुसूईया बहन तथा अन्य । 8. दिल्ली (कश्मीरी गेट)- शिव ध्वजारोहण करते हुए विधायक भ्राता प्रह्लाद सिंह साहनी । साथ में हैं ब्र.कु. मीरा बहन तथा अन्य। 9. दिल्ली (लोधी रोड)- शिव जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता अशोक आहूजा, ब्र.कु. गिरिजा बहन तथा अन्य ।



देहली तथा उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय सचित्र समाचार

1. सहारनपुर- शिव जयन्ती के अवसर पर रखे गये पत्रकार सम्मेलन में आये हुए विभिन्न समाचार-पत्रों के संवाददाता व वरिष्ठ पत्रकार समूह चित्र में । 2. पीलीभीत- शिवरात्रि पर प्रवचन करती हुईं ब्र.कु. प्रीति बहन । मंच पर विराजमान हैं ज़िलाधीश भाता संजीव कुमार, पुलिस अधीक्षक भाता राजेश राय, ब्र.कु. मधु बहन तथा अन्य । 3. बड़ौत- शिव ध्वजारोहण करते हुए उपज़िलाधिकारी भाता प्रवीण मिश्रा, ब्र.कु. मोहिनी बहन तथा अन्य । 4. ककोड़- शिव ध्वजारोहण करते हुए एडवोकेट भाता सुभाषचन्द, ब्र.कु. तारा बहन तथा अन्य । 5. रगड़गंज (गोण्डा)- शिव जयन्ती के शुभ अवसर पर पुलिस चौकी इंचार्ज भाता शरदचन्द्र तिवारी, ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. दिव्या बहन तथा अन्य परमात्म-स्मृति में । 6. अलीगढ़- भाता करण सिंह चौहान, मुख्य विकास अधिकारी को ग्राम विकास प्रदर्शनी के चित्र समझाती हुईं ब्र.कु. सुदेश बहन । 7. रूरा- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए प्रबन्धक भाता विनोद कुमार तिवारी । साथ में हैं ब्र.कु. प्रीति बहन तथा अन्य । 8. दिल्ली (द्वारिका)- सार्वजनिक कार्यक्रम में ब्र.कु. शुक्ला बहन ईश्वरीय अनुभवों से लाभान्वित करती हुईं । साथ में हैं प्रसिद्ध कपड़ा व्यापारी भाता चौधरी जी तथा ले. कर्नल कपूर जी । 9. दिल्ली (स्वास्थ्य विहार)- गरिमा गार्डन में आध्यात्मिक स्नेह मिलन में पधारे भाता दीपक मान, प्रबन्धक बैंक ऑफ इडिण्या, दादी कमलमणि जी, ब्र.कु. जगरूप भाई, ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा अन्य ग्रुप फोटो में । 10. दिल्ली (छज्जूपुर-पावी)- शिवध्वजारोहण के पश्चात् थाना प्रभारी लोनी जी, गाँव के प्रधान भाता बबलू, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन तथा अन्य परमात्म-स्मृति में खड़े हैं । 11. पिहानी (कानपुर)- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए थानाध्यक्ष भाता कृपाशंकर दीक्षित । साथ में हैं ब्र.कु. सीमा बहन ।



देहली तथा उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय सचित्र समाचार

1. इटावा (नेविल रोड)- शिव जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता भ्राता सिद्धनाथ पाण्डेय, ब्र.कु. ज्योत्सना बहन तथा अन्य । 2. कोसीकलाँ (छाता)- शिव जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए उप-ज़िलाधीश भ्राता हवलदार सिंह यादव, भ्राता प्रह्लाद सिंह, पुलिस उप-अधीक्षक, ब्र.कु. ज्योत्सना बहन तथा अन्य । 3. फतहेगढ़ (बढ़पुर)- शिव जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए डॉ. बहन रजनी सरीन, प्रदेश अध्यक्षा भाजपा समाज कल्याण प्रकोष्ठ, भ्राता सुनील दत्त द्विवेदी, प्रदेशाध्यक्ष भू.पू. सैनिक प्रकोष्ठ, ब्र.कु. शर्मिमा तथा अन्य । 4. आगरा (सेक्टर-7)- शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. विमला बहन, डिग्री कालेज के प्रधानाचार्य डॉ. बी.के. अग्रवाल, ब्र.कु. सरिता बहन तथा अन्य । 5. बरेली- सार्वजनिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्रिगेडियर डॉ. भ्राता श्यामलाल जी, ज़िलाधिकारी डॉ. भ्राता मूलचन्द यादव, अपर ज़िला जज भ्राता राजवीर सिंह, डॉ. भ्राता सतेन्द्र सिंह, ब्र.कु. पार्वती बहन तथा अन्य । 6. दिल्ली (लाजपत नगर)- शिव ध्वजारोहण के पश्चात् इस्कान, दिल्ली के उपाध्यक्ष भ्राता वी.एन.दास, ब्र.कु. चन्द्र बहन एवं ब्र.कु. आदर्श बहन के साथ । 7. फतेहगढ़- तनाव मुक्त जीवन विषय पर प्रवचन करती हुईं ब्र.कु. शीलू बहन । साथ में हैं ज़िला जज भ्राता राजेन्द्रनाथ शुक्ला, ज़िलाधिकारी भ्राता डी.सी.डी. भार्गव, ब्र.कु. सुमन बहन तथा अन्य। 8. हाथरस- शिव जयन्ती कार्यक्रम में बोलते हुए अपर ज़िलाधिकारी भ्राता प्रभात कुमार शर्मा । मंच पर विराजमान हैं अपर पुलिस अधीक्षक भ्राता जितेन्द्र कुमार शाही, ब्र.कु. सीता बहन, डॉ. वीरेन्द्र तरुण तथा ब्र.कु. श्याम पचौरी ।



देहली तथा उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय सचित्र समाचार

1. बुढ़ाना- भ्राता चितरंजन स्वरूप, अध्यक्ष आवास-विकास उत्तर प्रदेश को ब्र.कु. सरला बहन ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुईं । 2. धुमरी (एटा)- भ्राता एम. प्रकाश गुप्ता, अध्यक्ष, व्यापार मण्डल को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. सरोज बहन । 3. एटा (उ.प्र.)- भ्राता विजयपाल सिंह, ए.डी.एम. (प्रशासन) को शिव बाबा का चित्र भेंट करती हुईं ब्र.कु. सोमा बहन । 4. इलाहाबाद (दारागंज)- शिव जयन्ती महोत्सव पर दीप प्रज्वलित करते हुए ब्रह्मचारी आश्रम के महंत भ्राता प्रभुदत्त, न्यायमूर्ति (अवकाश प्राप्त) भ्राता उमाशंकर त्रिपाठी, ब्र.कु. कमल बहन तथा अन्य । 5. कायमगंज- शिव ध्वजारोहण करते हुए उप-ज़िलाधिकारी भ्राता संजय यादव एवं ब्लाक प्रमुख अधिकारी भ्राता अरविन्द गंगवार, ब्र.कु. मिथलेश जी तथा अन्य । 6. बरहज (वाराणसी)- उप-ज़िलाधीश भ्राता ए.के. सिंह को ब्र.कु. ज्योति बहन ईश्वरीय सौगात देती हुईं । 7. दिल्ली (कालका जी)- ब्र.कु. प्रभा बहन, श्री राधाकृष्ण मन्दिर ट्रस्ट के अध्यक्ष भ्राता रत्नलाल गर्ग को ईश्वरीय सौगात देती हुईं । 8. सीतापुर- डॉ. भ्राता राजकिशोर टण्डन को ईश्वरीय सौगात भेंट करती हुईं ब्र.कु. योगेश्वरी बहन । 9. दिल्ली (छज्जूपुर)- भ्राता अनिल वशिष्ठ, उपाध्यक्ष, दिल्ली नगर निगम को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन । 10. जौनपुर- जेलर बी.एन. मिश्र को ब्र.कु. पद्मा बहन ईश्वरीय सौगात देती हुईं । 11. दिल्ली (जैतपुर)- सद्भावना यात्रा के अवसर पर क्षेत्र के पार्षद भ्राता गोयल जी तथा पुलिस स्टेशन के.एस.एच.ओ. भ्राता सत्यवीर डागर को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. ऊषा बहन । 12. मुजफ्फर नगर- एडवोकेट भ्राता देवराज पवार को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. शक्ति बहन ।





















देहली तथा उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय सचित्र समाचार

1. बिलारी (उ.प्र.)- सेवाकेन्द्र के नये भवन का उद्घाटन करती हुईं राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी । साथ में हैं ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. नीलू बहन, ब्र.कु. अलका बहन, ब्र.कु. राखी बहन तथा अन्य । 2. दिल्ली (चाँदनी चौक)- व्यापारियों के लिए रखे गये कार्यक्रम में स्वागत गीत गाती हुईं ब्र.कु. संगीता बहन । मंच पर भ्राता जयप्रकाश, भ्राता बृजमोहन शर्मा, पार्षद, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. विमला बहन तथा ब्र.कु. प्रेमप्रकाश विराजमान हैं । 3. दिल्ली (लाजपतनगर)- आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् दिल्ली राज्य के मंत्री भ्राता एच.यूसुफ़ तथा अन्य समूह चित्र में । 4. कन्नौज (नखासा)- शान्ति की शक्ति विषय पर प्रवचन करती हुईं ब्र.कु. शीलू बहन । ब्र.कु. विद्या बहन तथा ज़िलाधिकारी डॉ. भ्राता आर.के. भटनागर मंच पर विराजमान हैं । 5. बाराबंकी (लखनऊ)- शोभा यात्रा के अवसर पर ब्र.कु. दादी सती, ब्र.कु. आनन्द तथा अन्य । 6. अकबरपुर (उ.प्र.)- शिव ध्वजारोहण के पश्चात् प्रसन्न मुद्रा में खड़े हैं स्वामी बजरंग दास जी, ब्र.कु. सोमा बहन तथा अन्य । 7. फर्रुखाबाद- शिव जयन्ती महोत्सव पर केक काटते हुए नगर मजिस्ट्रेट भ्राता राजपाल सिंह, भ्राता प्रताप सिंह, सिटी.सी.ओ., पूर्व सांसद भ्राता छोटे सिंह, ब्र.कु. साधना बहन एवं अन्य । 8. दिल्ली (लॉरेन्स रोड)- शिव जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करती हुईं निगम पार्षद बहन अनुजा पोपली, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, आनन्दपुर मठ की माता रामप्यारी जी तथा ब्र.कु. शोभा बहन । 9. दिल्ली (गाजीपुर)- डॉ. भ्राता डी.के. पाण्डे, अध्यक्ष डी.सी.बी.एस. को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. कमलमणि जी तथा ब्र.कु. सुधा बहन । 10. उन्नाव (उ.प्र.)- शोभायात्रा का शुभारम्भ करते हुए जेल अधीक्षक भ्राता दधिराम मौर्य। साथ में ब्र.कु. रामपाल, ब्र.कु. कुसमा बहन तथा अन्य ।

कर्म गति टारे न टरे

– ब्रह्माकुमार ज्योति भाई, बल्लबगढ़

निराकार शिव परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम से हमें बताया है कि मानव जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा है उसके पीछे मानव के अपने ही कर्म हैं फिर चाहे वे रोग-शोक पैदा करने वाली घटनाएँ हों अथवा हर्ष और उल्लास प्रदान करने वाले सुखद क्षण। अतीत के गर्भ के बिना कोई वर्तमान अपना अस्तित्व नहीं पा सकता। जीवन जैसा भी है – सुखी या दु:खी – इसके पीछे निश्चित ही व्यक्ति के कर्म हैं। परमात्मा कभी किसी के प्रति भेदभाव नहीं करते। वे कभी भी किसी को दु:ख नहीं देते हैं तभी तो हम उन्हें दु:खहर्त्ता-सुखकर्त्ता कहते हैं।

जो परमात्मा के इस विधान को जानते हैं उन्हीं को विवेकवान कहा जाता है। अपने कर्मों की जिम्मेवारी को स्वीकार करने वाले ही इन्हें सँवारने का सच्चा पुरुषार्थ कर पाते हैं अन्यथा और लोग तो अपनी चिन्ताओं, विपन्नताओं का दोष दूसरों के मत्थे मँढ़ते रहते हैं। जिन्हें जीवन को श्रेष्ठ बनाना है वे कर्मफल के सिद्धांत को समझें और ईमानदारी और बहादुरी से इसे निभाएँ। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में कर्मों की गुह्य गति अर्थात् कर्म-अकर्म, विकर्म व सुकर्म के ज्ञान पर विशेष प्रकाश डाला जाता है। इसी को ही आध्यात्मिक ज्ञान कहते हैं।

महाभारत में वर्णन आता है कि एक बार धृतराष्ट्र ने भगवान से जानना चाहा कि मैं किन कर्मों के परिणामस्वरूप अन्धा हुआ हूँ। इस पर भगवान ने दिव्य दृष्टि के बल से उसके पिछले जन्मों में झाँका और कहा कि अब से पिछले तीन जन्मों में तुमने ऐसा कोई पाप कर्म नहीं किया है जिसकी वजह से तुम्हें अन्धा होना पड़े। धृतराष्ट्र बोले – "भगवन्, इसका मतलब कर्मफल का विधान मिथ्या सिद्ध हुआ।" "नहीं धृतराष्ट्र, इतना शीघ्र किसी निष्कर्ष पर न पहुँचो," यह कह कर भगवान अन्य विगत जन्मों का हाल बताने लगे – "इस समय मैं तुम्हारे 36वें जन्म को देख रहा हूँ। इसमें एक युवक खेल-खेल में पेड़ पर लगे चिड़ियों के घोंसले उठा रहा है और देखते-ही-देखते उसने चिड़ियों के सभी बच्चों की आँखें फोड़ दीं। ध्यान से सुनो धृतराष्ट्र! यह युवक और कोई नहीं, तुम ही हो। विगत जन्मों में तुम्हारे पुण्य कर्मों की अधिकता के कारण यह पाप उदय न हो सका। इस बार पुण्य क्षीण होने के कारण इस अशुभ कर्म का उदय हुआ है।" धृतराष्ट्र आश्वस्त हो गया।

उपरोक्त घटना से हमें यही सीख मिलती है कि कर्म का फल अपरिहार्य है। कर्म रूपी बीज का फल अवश्य निकलेगा। कई बार यह फल तुरन्त निकल आता है और कई बार कुछ मास, वर्ष या जन्म बीतने पर यह प्रत्यक्ष हो जाता है। अत: कभी किसी को स्वप्न में भी दु:ख नहीं देना चाहिए। मानव जाति तो क्या पशु-प्राणियों को भी कभी नहीं सताना चाहिए। **जो चीज़ देंगे वही कई गुणा होकर लौटेगी।** सुख देंगे तो अवश्य ही सुख में आनन्दित होंगे और यदि दु:ख देंगे तो दु:खी भी होना पड़ेगा। हम जो चाहते हैं, वैसे ही कर्म-बीज बोने चाहिएँ अर्थात् सुखदायी, दुआ दिलाने वाले कर्म ही करने चाहिएँ। परमप्रिय शिव बाबा भी हमें शिक्षा देते हैं – 'न दु:ख दो, न दु:ख लो', 'दुआएँ दो, दुआएँ लो', 'स्वमान में रहो, सम्मान दो' तथा 'रहमदिल और दाता बनो'।

✦✦

यह संसार हार और जीत का खेल है – इसे नाटक समझ कर खेलो।

समर्थ संकल्प देते हैं खुशी

– ब्रह्माकुमारी राधा, पानीपत

मानव के पास, कई पशु-प्राणियों की भेंट में बहुत कम शारीरिक बल है परन्तु फिर भी वह चर जगत का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है क्योंकि उसके पास विवेक बल अर्थात् समर्थ संकल्प का बल है। इस बल से वह बलशाली प्रकृति और पशु-प्राणी को वश कर सकता है तथा हर दु:खदायी परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर सकता है। संकल्प की शुद्धि तथा दृढ़ता से, हिलाने वाली परिस्थितियों में भी अचल-अडोल रह सकता है। गुलाब के फूल से एक बार किसी ने कहा – क्या जीवन है तेरा, सारा दिन काँटें चुभते रहते हैं? गुलाब ने कहा – किसने कह दिया यह, ये काँटें तो पैने हथियार थामे जीवन भर मेरी रक्षा करते हैं। फूल तो निर्जीव है, अबोल है। वास्तव में, यह संवाद है उस मानव का जो असंख्य बन्धनों में घिरा होने पर भी उन बन्धनों से तंग नहीं है। वह ऊँची सोच से उन बन्धनों को अपनी छत्रछाया और संरक्षक के समान महसूस करता है और उन्हीं में रह कर आगे बढ़ता जाता है। कालान्तर में ये बन्धन भी स्वयं ढीले पड़ जाते हैं और उस मुक्त मन के धनी के आगे नतमस्तक हो जाते हैं। एक ईश्वर प्रेमी के इकलौते पुत्र ने अकाल ही देह-त्याग कर दिया। ईश्वर प्रेमी की आँखों में आँसू नहीं आए। लोगों में कानाफूसी होने लगी। ईश्वरी प्रेमी ने सहज भाव से उत्तर दिया – यह सृष्टि भगवान का बगीचा है और हर मानव एक सुन्दर फूल है। उस बागवान को यदि बगीचे का कोई फूल पसन्द आ जाए और उससे वह अन्यत्र सुगन्ध फैलाना चाहे तो इसमें रोने की बात क्या है, यह तो गर्व करने की बात है। और फिर मेरा तो कुछ है भी नहीं, सब कुछ प्रभु का ही है। कुछ समय के लिए उनकी एक चीज मेरे पास अमानत के रूप में थी जिसकी सम्भाल करना मेरा कर्त्तव्य था, समय पूरा हुआ तो अमानत मुझसे दूर चली गई। यह तो निश्चित ही था। हाँ, मैं प्रभु का उपकार इसलिए मानता हूँ कि मैंने उनकी वस्तु को न मालूम कितनी बार अपना मान लिया था, न जाने कितनी बार मेरे मन में बेईमानी आई थी, उसकी देखभाल में कितनी भूलें हुईं परन्तु प्रभु ने मेरी इन भूलों पर कोई ध्यान नहीं दिया, मुझे कोई उलाहना नहीं दिया। मैं उनके इस उपकार के प्रति कृतज्ञ हूँ।



कुरुक्षेत्र- शिव जयन्ति के अवसर पर निकाली गई शोभायात्रा का दृश्य। ब्र.कु. लक्ष्मण भाई, ब्र.कु. प्रेम बहन (जिन्होंने 26 मार्च को देह त्याग दी) तथा अन्य।

इस प्रकार, समर्थ संकल्पों से हम दु:खदायी दिखने वाली बात को भी सुखद बना सकते हैं। मन कमजोर है तो संसार समस्याओं का सागर है और मन समर्थ है तो यही संसार मन बहलाव का एक आनन्दकारी करतब बन जाता है। अत: श्रेष्ठ संकल्पों से मन को सशक्त बनाइये। देखने के तरीके को बदलिए, सोच को बदलिए। इससे आप खोने में पाने का और विनाश में नवनिर्माण का सुन्दर नज़ारा देख पायेंगे।

★★★

सहनशीलता शक्ति या कमजोरी

– ब्रह्माकुमार बिहारी, गोरखपुर

दिव्य गुण अनेक हैं, जिन में सहनशीलता भी एक है। शारीरिक शक्ति प्रकृति की देन है जबकि आन्तरिक शक्ति प्रभुप्रदत्त है। स्थूल और भौतिक दृष्टि वाले, आन्तरिक शक्ति से अनभिज्ञ रहते हैं। उनकी दृष्टि में सहनशीलता कमजोरी एवं कायरता है, बुजदिली और मजबूरी है। वे समझते हैं कि ईंट का जवाब पत्थर से देना ही शान्ति से जीना है।

विचारणीय है कि सहनशीलता के प्रति ऐसा नकारात्मक दृष्टिकोण कहाँ तक उचित और सत्य है। कोई किसी पर क्रोध करता है, दूसरा उसे सहन कर चुप रहता है तो आज के मानव मन में, अधिकतर, उसकी यह चुप्पी शंका पैदा करती है कि कहीं वह डरपोक और कमजोर तो नहीं जो इस प्रकार अत्याचार को सहन कर लिया! लेकिन **गम्भीरता से विचार करें तो महसूस होगा कि उस अहंकारी की भेंट में शालीनता का व्यवहार करने वाले की आन्तरिक शक्ति कहीं ज्यादा है। शक्ति का मापदण्ड तो यही है कि कोई कितना बोझ सहन कर सकता है। एक पुल, जिस पर कई टन माल से लदे ट्रक आसानी से गुजर जाते हैं, पूरी गति और भारी वजन को लेकर रेलगाड़ी पार हो जाती है, क्या वह पुल कमजोर है? नहीं। यह सिद्ध करता है कि उस ट्रक और रेलगाड़ी की शक्ति से पुल की शक्ति कहीं ज्यादा है। हाथी की पीठ पर कई पक्षी एक साथ बैठ जाते हैं तो उसे पता भी नहीं लगता इसलिए वह उनको उड़ाने का प्रयास भी नहीं करता। यह हाथी की कमजोरी का नहीं बल्कि उसके अधिक बलवान होने का प्रमाण है। परिवार में, छोटे-छोटे बच्चे प्यार ही प्यार में कई बार हमसे उलझ जाते हैं, अपने हाथों और पैरों से हमें मारने भी लग जाते हैं, क्या ऐसे समय में हम उन बच्चों से डर रहे होते हैं?** नहीं, हमारा ध्यान होता है कि कहीं हमारा मजबूत हाथ जोर से न लग जाए क्योंकि हम उन नन्हे-मुन्नों से कहीं अधिक बलवान होते हैं।

उपरोक्त लौकिक प्रमाण भले ही आप अस्वीकार कर दें परन्तु पारलौकिक प्रमाण तो स्वीकार करेंगे ही। जरा सोचिए, ब्रह्मा बाबा के सामने कौन-सी मजबूरी या कमजोरी थी? उनके तन में तो खुद सर्वशक्तिवान ही बैठा था, फिर भी उन्होंने अत्याचारियों के अत्याचार को, उपद्रवियों के उपद्रव को सहन किया। परमपिता परमात्मा भी मनुष्यात्माओं की हर गलत बात देखते-सुनते भी उनके प्रति स्नेह और उपकार का भाव सदा बनाए रखते हैं। यह सदा का उपकारभाव उनका सर्वशक्तिवान होना सिद्ध करता है। इन उदाहरणों से सिद्ध होता है कि सहनशीलता कमजोरी नहीं बल्कि सर्वाधिक शक्ति का प्रतीक है। छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित होना कमजोरी है और सहन कर लेना मजबूती है। क्रोध करने वाला अज्ञानी होता है, सहन करने वाला ज्ञानी होता है। अज्ञानी की शक्ति से, ज्ञानी की आन्तरिक शक्ति कई गुणा ज्यादा होती है।

सहनशीलता है क्या?

सहनशीलता का अर्थ है – जीवन में होने वाली हर उस घटना को सहन करना जो देखने में दुखद और अनचाही हो। इसलिए साधारण रूप में हर दु:ख-दर्द को सहन करना सहनशील होने का प्रमाण माना जाता है। परिस्थिति या घटनाओं को सहन करना माना अपनी सहनशक्ति से उनका मुकाबला करना, न कि उनके आगे नतमस्तक होना। उनके आने पर हाय-तौबा मचाना, चीखना-चिल्लाना नहीं बल्कि उन पर विजय प्राप्त करना, उनके प्रभाव से स्वयं को मुक्त रखना। सहनशीलता योगी जीवन का श्रृंगार है तथा व्यक्तित्व का आभूषण है। गहरा सागर सदैव शान्त रहता है, यह स्थिति योगी जीवन में भी लागू होती है। सहनशीलता अपना कर हम अपने अन्दर की संचित ऊर्जा को सेवा में लगाकर समाज में एक विशेष पहचान बनाते हुए एक विशिष्ट आत्मा

बन सकते हैं।

क्षमा, सहनशीलता का प्रमाण है

सहनशीलता को हम क्षमा द्वारा व्यक्त कर सकते हैं। महानता इसी में है कि ताकतवर होते हुए भी सहिष्णु बनें। शक्ति का नकारात्मक प्रदर्शन करने से काम बिगड़ जाता है। हम अपने आचरण से ऐसा अवसर ही न आने दें जो शक्ति का नकारात्मक प्रदर्शन करना पड़े। इससे कटुता उत्पन्न होती है, सम्बन्ध टूट जाते हैं, पुरुषार्थ में बाधा पड़ती है। सहनशीलता अपना कर देखें, लोगों में अपनापन दिखेगा, दूसरों की सहानुभूति और स्नेह मिलेगा। सहनशीलता को शक्ति मानकर अपने आचरण में उतारें।

प्रत्येक परिस्थिति में स्थिति एकरस रहे

ज्ञान के आधार पर अपमान को सहन कर लेना सहज होता है परन्तु सम्मान मिलने पर उत्पन्न हो जाने वाले सूक्ष्म अहंकार के प्रभाव से मुक्त रहना कठिन होता है। सेवा में सम्मान मिला तो फूल कर गुब्बारा बन जाते हैं और यदि किसी ने कुछ कह दिया तो मुँह लटक जाता है। यह वास्तविक सहनशीलता की निशानी नहीं है। सहनशीलता की निशानी है सुख और दु:ख में, जय और पराजय में, सम्मान और अपमान में एकरस स्थिति में स्थित रहा जाए। दोनों परिस्थितियों के प्रभाव से बचे रहने से ही ''मास्टर सर्वशक्तिवान'' टाइटल की सार्थकता सिद्ध होती है।

याद रखिए, ईश्वर भी अनजान बच्चों की गालियाँ सहन करते हैं तो हम ईश्वरीय सन्तानों ने अगर सहन कर भी लिया तो कौन-सी बड़ी बात हुई! हमें ईंट का जवाब पत्थर से नहीं देना है बल्कि शान्त स्वरूप बन, शान्ति का ही दान देना है। हम ब्रह्मामुख वंशावली ब्रह्माकुमारियाँ, कुमार हैं, अपने बोल और व्यवहार को पिताश्री ब्रह्मा समान बनाना ही है, तभी ''सन शोज फादर'' का स्लोगन सिद्ध होगा। ❑

दुश्मन पाँच विकार

– ब्रह्माकुमार जगदीराम भाई मदेल, रतलाम

काम विकार पहला दुश्मन है, बचना इसके वारों से,
इसकी चाल में फँसना मानो जलना है अंगारों से।
पवित्रता के पालन से यह जाता जान से मारा,
पाँच विकारों से बढ़कर कोई दुश्मन नहीं हमारा।।

दूजा दुश्मन क्रोध विकार, देखो, यह आए न कभी,
जब आए तूफान मचाए, फिर शांति मिल पाए न कभी।
शीतल, मधुर, शांत स्वभाव से उतरे क्रोध का पारा,
पाँच विकारों से बढ़कर, कोई दुश्मन नहीं हमारा।।

शत्रु तीसरा लोभ हमारा, दूर करे संतोष धन से,
इच्छा में जीवन खप जाता, तृष्णा जाती नहीं मन से।
लोभी नहीं, योगी बन, बहा, पवित्रता की धारा,
पाँच विकारों से बढ़कर, कोई दुश्मन नहीं हमारा।।

मोह विकार चौथा दुश्मन है, इसकी थाह न पाती है,
मोह-ममता ही गर्भ जेल में बार-बार ले जाती है।
शिव मेरा, मैं शिव का, यूँ हो मोहपाश से छुटकारा,
पाँच विकारों से बढ़कर, कोई दुश्मन नहीं हमारा।।

अहंकार की चोटी ऊँची पर अन्दर है सब असार,
इसके कारण मान-शान में डूबा रहता है संसार।
इसको जीतो आत्मा बनकर,देह वस्त्र से रहना न्यारा,
पाँच विकारों से बढ़कर, कोई दुश्मन नहीं हमारा।।

दिल से देते चलो दुआयें

– ब्रह्माकुमार सतीश, आबू पर्वत

बादशाह बाबर ने उस वक्त खुदा से दुआएँ (खैर) माँगी, जब उनका बड़ा बेटा हुमायूँ सख्त बीमार पड़ा और उसके बचने की उम्मीद जाती रही। दुआओं की करामात से हुमायूँ बच भी गया और तन्दुरुस्त होकर दिल्ली सल्तनत की बागडोर भी उसने संभाल ली। कहते हैं कि बीमार बेटे हुमायूँ की खाट के सात फेरे लगाकर बाबर ने दुआ की "ऐ खुदा, तू मेरी जान ले ले पर मेरे बेटे की जान बख्श दे" और देखते ही देखते बाबर तो बीमार होने लगा किन्तु हुमायूँ ठीक हो गया। तो क्या सचमुच दुआओं में इतनी शक्ति है? यदि हाँ तो प्रश्न उठता है कि सभी दुआओं से ही क्यों नहीं ठीक हो जाते हैं, सभी तो अपने स्वजनों के लिए हृदय से स्वस्थ होने की कामना करते ही हैं। क्या दुआयें देने व लेने के लिए कोई विशेष शर्त है? दुआयें क्या हैं? आज इनकी इतनी सख्त जरूरत क्यों है? कैसे दुआयें दें और कैसे दुआयें लें – आइये इस पर तनिक विचार करें।

क्या प्रार्थना, शुभकामनायें, आशीष व दुआयें एक ही हैं?

वास्तव में भाषा, समय, स्थान व संबंध भेद की दृष्टि से इनमें कुछ अन्तर हो सकता है किन्तु इनका भावात्मक अभिप्राय एक ही है। मनोवैज्ञानिक भी प्रार्थना में समाहित अद्भुत शक्ति का समर्थन करते हैं। संकट में, त्रासदी एवं विपदा के क्षणों में सामूहिक प्रार्थनाओं के पीछे यही तो उद्देश्य है। दुआओं का मतलब ही है प्रार्थना, विनय, आशीर्वाद, शुभकामना इत्यादि। दूसरे शब्दों में, निस्स्वार्थ सेवा व उपकार के प्रतिकार में हृदय से निकली घनीभूत शुभकामनाओं व आशीष को दुआ कहते हैं। बड़ों का आशीर्वाद, इष्ट का वरदान और उपकृत की दुआयें गाई गई हैं।

दिल की दुआओं में बड़ा ही असर है

दुआयें-बद्दुआयें, शुभ भावनायें-दुर्भावनायें, शुभकामनायें-अशुभ कामनायें, वरदान-श्राप जैसे शब्द आम बोलचाल की भाषा में प्रचलित हैं। इनका प्रचलन ही इनके अस्तित्व को सिद्ध करता है। इनके सामर्थ्य की बात अलग है किन्तु संकल्प-शक्ति, वैचारिक दृढ़ता एवं मनोबल के चमत्कारिक प्रभावों से इंकार नहीं किया जा सकता। चूंकि विचार व भावनायें सूक्ष्म एवं अमूर्त हैं अत: इनके निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग एवं निष्कर्ष भी सूक्ष्म हैं जो किसी भौतिक प्रयोगशाला में विश्लेषित किए जाने की विषय-वस्तु नहीं हैं। तो भी आधुनिक विज्ञान ने इस दिशा में अनेक साधन, सुविधायें, शोध एवं सफलतायें प्रदान की हैं। संकल्प शक्ति के प्रयोग एवं परिणाम अत्यन्त विस्मयकारी हैं। हम, हमारा समाज और संसार भी हमारी आंतरिक स्थिति के ही प्रतिबिंब हैं। आज जो कुछ भी हो रहा है वह हमारी मानसिकता, सोच-विचार एवं व्यवहार का ही परिणाम है। हम अपने आन्तरिक परिवर्तन द्वारा बाह्य जगत को बेहतर बना सकते हैं।

आज की आवश्यकता है – शुभ भावनायें, शुभ कामनायें एवं दुआयें

दिनोंदिन गिरते जा रहे मानवीय मूल्यों से आज परिस्थितियां विकराल रूप लेती जा रही हैं। व्यक्ति स्वयं को सर्वथा असुरक्षित महसूस कर रहा है। शुष्क होते जा रहे संबंध, बढ़ती समस्यायें, रोग, शोक, दु:खों का तांडव, आर्थिक विषमता, विकृत मानसिकता, भयानक प्राकृतिक आपदायें एवं आत्मघाती विनाशकारी प्रवृतियों ने मानव को चिंता, तनाव एवं दु:ख की अग्नि में झोंक दिया है। पल-प्रतिपल प्रलय के पास पहुंचती पृथ्वी अब प्राणों की भीख मांग रही है। सचमुच आज व्यक्ति की दशा

और दिशा शोचनीय हो गई है। वे कुछ लोग जो आज के वास्तविक परिदृश्य से आंखें मूंद कर क्षणिक मिथ्या सुखों से अपना मन बहलाव कर रहे हैं भले ही यहीं पर स्वर्ग का भ्रम पाले रहें किंतु आज जो समाज की विस्फोटक स्थिति बन चुकी है वह अत्यन्त दयनीय है। ऐसे में कष्टों से पीड़ित मानवता को शुभ भावनाओं, स्नेह-सहयोग एवं सच्ची सहानुभूति की परम आवश्यकता है। आज सुनामी जैसी प्रलयकारी परिस्थिति में दुआओं की बड़ी जरूरत है। **ये शुभ भावनाएं व शुभ कामनाएं विक्षिप्त व पीड़ित लोगों को राहत एवं सुख प्रदान करेंगी, गई हुई आत्माओं को शान्ति एवं अन्य आत्माओं को स्नेह-सहयोग के लिए अभिप्रेरित करेंगी। निश्चित ही यह समय की मांग है।** एक ओर हम दीन–दुखियों को यथासंभव सहयोग-सहायता प्रदान करें तो दूसरी ओर अपनी शक्तिशाली शुभभावनाओं की तरंगें प्रसारित करें। ये दुआयें घायलों के लिए मरहम हैं, थकी आत्माओं के लिए मसाज का काम करती हैं, दर्दी (रोगी) के लिए यही सच्ची हमदर्दी बन जाती हैं। यही सच्ची दर्द निवारक गोलियां हैं ।

हमेशा करतीं मदद दुआयें

दुआयें बड़े काम की हैं। संकट में सहयोगी बनकर, अकेले में साथी बनकर, बीमारी में दवा बनकर मदद करती हैं। सच तो यह है कि जहां दवा भी काम नहीं आती वहां ये दुआयें असर करती हैं। तभी तो लाईलाज होने पर विशिष्ट व्यक्तियों के स्वास्थ्य के लिए दुआओं का ही सहारा लिया जाता है। दवा करते-करते जब बचने की आशा क्षीण हो जाती है तो सभी यही कहते हैं कि अब तो दुआ ही बचा सकती है। वास्तव में **दुआयें ही हमें जन्म-जन्मान्तर तक सुख-शान्ति की अधिकारी बना देती हैं। विदेश में स्थित स्वजन के प्रति भी शुभ संकल्पों का संप्रेषण ही सफल शल्य चिकित्सा का काम करता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान तो अभी इसका प्रयास ही कर रहा है। जो भी हो, दुआओं में निहित अपार शक्ति को मापना आसान नहीं है। दिल से निकली दुआओं में अद्भुत शक्ति होती है। ठीक इसके विपरीत दु:खियों एवं सताये गये व्यथित हृदय से निकली आह से, बद्दुआ से अपार क्षति भी होती है।** इन्हीं भावों को व्यक्त करती हैं ये पंक्तियां –

दुर्बल को ना सताइए
जाकी मोटी हाय,
मुई खाल की सांस सों
लोह भस्म हो जाय।

भावार्थ यही है कि निर्बल व असहाय प्राणी की खाल से बनी धौंकनी से तेज की गई अग्नि में लोहा भी भस्म हो सकता है तो जीवित संतप्त व्यक्ति की आह क्या नहीं कर सकती ?

दुआएं कौन दे सकते हैं और कैसे ?

दुआएं देने के लिए अनिवार्य शर्त की आवश्यकता तो नहीं है किंतु दुआयें किसी की हल्की तो किसी की असरकारी होती हैं। ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिए कि – 1. भावनाओं में स्थिरता नहीं है अभी–अभी हमारे मन में सद्भावना तो अभी-अभी दुर्भावना का ज्वार-भाटा उठने लगता है। विचारों में व्यर्थ चिंतन, परचिंतन व साधारण चिंतन की मात्रा अधिक होती है इसलिए न ही वैचारिक दृढ़ता रहती है और न ही मन की निर्मलता। 2. दुआयें देने के लिए दुआओं का भण्डार भरा हो। जब हम स्वयं दुआओं से खाली होंगे अथवा न तो दुआयें लेने का प्रयास करते हों, न देने की भावना रखते हों, तो हमारी दुआओं में दम कैसे भर सकता है। 3. आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त व्यक्तियों की इच्छा शक्ति साधारण लोगों की तुलना में अधिक होती है। उनकी दुआयें व आशीर्वाद अथवा वरदान शक्ति संपन्न होते हैं। 4. पवित्र एवं निर्मल मन से किये गये संकल्प शीघ्र साकार हो सकते हैं क्योंकि वे नि:स्वार्थ, निष्पक्ष, निर्दोष होने के कारण एकाग्रता का बल लिए होते हैं। 5. सबसे महत्त्वपूर्ण बात है

संकल्प शक्ति व योगबल के लिए सर्वशक्तिमान परमात्मा से बुद्धियोग जुड़ा रहे।

दुआयें किसे दें और किससे लें ?

दुआयें स्वयं को दें और स्वयं की लें – शुभभावनाओं का प्रवाह अंतर्मन में चलाते रहना, स्वयं के संकल्प, बोल एवं कर्मों को श्रेष्ठ बनाकर श्रेष्ठ जीवन, श्रेष्ठ भाग्य निर्माण की दिशा में प्रयत्नशील रहना – यह है स्वयं को दुआयें देना और अपनी प्राप्तियों, श्रेष्ठ जीवन एवं भाग्य का स्मरण करना, यह है स्वयं की दुआयें लेना।

दुआयें सर्व को दें और सर्व की लें – मनसा-वाचा-कर्मणा सबकी सेवा एवं भलाई का कार्य करना, सबको आत्मानुभूति एवं परमात्मानुभूति कराना, सबको सच्चे सुख व सच्ची शान्ति की राह दिखाना, सुख देना – ये हैं सर्व को दुआयें देना और इन सेवाओं से जो प्रसन्नता, प्रशंसा एवं आशीर्वाद प्राप्त होता है, वह है सर्व की दुआयें लेना।

दुआयें प्रकृति को दें और प्रकृति की लें – अपनी देह प्रकृति एवं प्रकृति के पांचों तत्वों को पावनकारी संकल्पों से शुद्ध बनाना, वातावरण को अपने शुभ एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से शक्तिशाली एवं सुख-शान्तिमय बनाना, यह है प्रकृति को दुआयें देना और देह प्रकृति व बाह्य प्रकृति से प्राप्त सुख-सहयोग का आभास और आभार प्रकट करना, ये है प्रकृति की दुआएं लेना।

दुआयें परमात्मा को दें और परमात्मा की लें – दुआयें परमात्मा को देने का अभिप्राय है उसे प्रेम से निरंतर स्मरण करना, धन्यवाद ज्ञापित करना, आभार प्रकट करना, अहोभाव से भरे रहना एवं निरंतर उनकी आज्ञा का पालन करना। परमेश्वर माता-पिता की अत्यंत प्रिय संतान बन उनका आशीष प्राप्त करना – यह है परमात्मा की दुआयें लेना। किसी शायर ने कहा है – ''कोई हादसा उनका करेगा क्या, ले ली जिसने मां-बाप की दुआ।।''

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया – 'सबका भला हो, सब सुख पायें, सभी स्वस्थ हों – जब ये उदात्त संकल्प हमारे हृदय की गहराइयों से प्रस्फुटित होते हैं तो हमारा मन लोकमंगल भावना से भर जाता है। निस्वार्थ वृत्ति व निर्दोष दृष्टि इन शुभ संकल्पों के प्रवाह को संबल देते हैं। फिर तो पूर्वाग्रहों, तर्कों व शर्तों की परिधि परे रह जाती है। ''हम सभी के हैं, सभी हमारे हैं'' – यह अवधारणा हमें सर्व का स्नेही व शुभचिंतक तथा लोकप्रिय बना देती है। फलत: हमें सभी की दुआयें तो मिलती ही हैं, साथ ही साथ हमारा हृदय भी सुख-शांति से, दुआओं से सराबोर हो जाता है। तो लहराने दीजिए अपने अन्तस्थल से शुभ भावनाओं का समन्दर।

ये दुआयें विपत्ति में, दुर्दिन में, साथी बन सहयोग-सहायता प्रदान करती हैं। मूर्छित के लिए संजीवनी बूटी बन जाती हैं। यही वे दुआएं हैं जो मरते हुए को भी जिंदा कर देती हैं। सचमुच जिनके पास दुआओं का खजाना है, वे निश्चिंत हैं, बेफिक्र हैं, यही दुआएं शीश पर आशीष वाले वरद्हस्त बन जाते हैं। इसलिए जब तक तन में प्राणों का संचार हो रहा है, नेक कर्म से, सद्‌गुणों से, सेवा-सुश्रुषा से, सच्चाई से सबके दिलों की दुआयें लेते चलें। भुला दें किसी के दुर्व्यवहार को, वैर-भाव को। ईर्ष्या व नफरत की आग पर स्नेह एवं आत्मिक भाईचारे का शीतल जल डाल दें, सबकी भलाई के ही विचारों का प्रवाह होता रहे। निश्चय ही दुआओं से पुण्य का भण्डार भर जायेगा। ठीक ही कहा है –

कुछ करके भला,
लेके मुफलिसों की दुआ,
तुम बिगड़ी हुई अपनी
बना क्यों नहीं लेते।"

▲▲

दुःखद घटनाओं के आघात कैंसर के जनक हैं।

– ब्रह्माकुमारी डॉ. हंसा रावल, अमेरिका

टेक्सॉस में एक ओन्कोलॉजिस्ट, एक रेडियोलॉजिस्ट, एक पेथोलॉजिस्ट और एक साइकोलॉजिस्ट ने एक संस्था स्थापित की। उसका नाम रखा गया 'साइमेन्टल'। उस संस्था में उन मरीजों को रखा जाता था जो अंतिम स्थिति में पहुँच जाते थे और जिनके लिए डॉक्टर यह बोल देते थे कि अब इन्हें घर ले जाओ, अब कुछ नहीं हो सकता। उनमें डायबिटिज, टी.बी., कैंसर आदि के मरीज थे। उस संस्थान में उन्होंने झाड़ू-पोछा करने वालों सहित पूरे स्टाफ को सकारात्मक चिन्तन (मेडिटेशन) की ट्रेनिंग दी। उन्हें कहा गया कि जब भी कोई मरीज आए तो 'हाय बेचारा' आदि बातें नहीं सोचना है बल्कि यह सोचो कि यह ठीक होकर जायेगा, दौड़ कर जायेगा। उसे शक्ति का दान दो। उन्होंने यह भी प्रशिक्षण दिया कि सकारात्मक चिन्तन में यह सोचो कि हम लाल लाइट से शक्ति लेकर इस मरीज में भरते हैं (उनका अपना तरीका ध्यान का), यह मरीज एकदम शक्तिशाली हो रहा है और इसकी बीमारी को लाल लाइट जला रही है। मरीज के परिवार वालों को भी मेडिटेशन सिखाया जाता था ताकि वे यह न सोचें कि हम उसकी सेवा करें, पानी पिलाएँ, उठाएँ। बिल्कुल नहीं। दया नहीं दिखानी है। मैं अपने एक मरीज को, जो अन्तिम श्वास गिन रहा था, वहाँ ले गई। उसके परिवार में कोई नहीं था। उस मरीज को बोला गया कि आज से आपको चार बातें करनी हैं। एक, रोज व्यायाम करना है। मरीज मुझे देखने लगा कि मैं तो बिस्तर से उठ भी नहीं सकता हूँ, मैं कैसे व्यायाम करूँगा। मैंने कहा कि डॉक्टर आपको बताएगा कि आपको कौन-सा व्यायाम करना है। डॉक्टर ने बताया कि आपको अपना अँगूठा हिलाना है। दूसरा, एकदम शाकाहारी भोजन करना है, कोई भी माँसाहार नहीं। तीसरा, आपको यह सोचना है कि मैं इस अस्पताल से दौड़ कर जाऊँगा। ऐसा सोचो कि शार्क या मगरमच्छ मेरे शरीर में आता है और कैंसर को खा जाता है। रोज यह सोचना है कि एक लाल लाइट मेरे शरीर में जाती है और कैंसर को आग से जला देती है। आपको कोई दया भाव से देखता है तो उसकी तरफ ध्यान नहीं देना है। चौथा, आपको कोई भी अच्छा-सा शौक डालना है और कोई भी कला सीखनी है जैसे कि टेनिस, क्रिकेट, बेडमिंटन, पेंटिग, कुकिंग आदि और इस प्रकार बीमारी से मन को दूर रखना है। उस मरीज को छोड़ कर मैं चली गई। एक साल के बाद, वो मरीज बिना समय निर्धारित किए मेरे कार्यालय में आया। मैंने उससे उसका परिचय जानना चाहा तो उसने कहा – "लगता है कि आप मुझे भूल गई हैं, अच्छी तरह से देखो, मुझे आप पहचान जाएंगी।" मैंने ठीक रीति से देखा और पूछा कि आप वो हैं जिसे मैं अस्पताल में छोड़ कर आई थी ? तब उसने बताया कि मैं एकदम ठीक हो गया हूँ। जो-जो उन्होंने मुझे करने को बोला था वो-वो मैंने किया और मैं ठीक हो गया। उस संस्था में 600 मरीज भर्ती किए गए थे और उनमें से 69.8% मरीज ठीक हो गए। एक अध्ययन यह भी हुआ है कि इन सभी मरीजों के साथ बीमारी होने के 6 मास पहले कोई घटना, दुर्घटना, किसी का शरीर छोड़ना, लूट-डकैती होना, किसी का तलाक होना आदि सब हुआ था। जब किसी को असहनीय दुःख हो और वो किसी को बता भी न सके तब कैंसर जैसी बीमारी होती है। उन वैज्ञानिकों के अध्ययन के अनुसार 85% मरीज ऐसे थे जिनके जीवन में 6 मास पहले कुछ-न-कुछ

दुखद घटा था। हमारे अध्ययन के अनुसार यह संख्या 95% थी।

मनोबल से माया (विकारों) पर विजय

मैं एक बार सेवार्थ फिलीपिन्स गई थी। क्लास के बाद एक बहन ने कहा कि मेरी बहन को कैंसर है, आप उससे बात कीजिए। वह बहन 35 वर्ष की थी और कैंसर बहुत भयानक था। वह मुझसे बात नहीं करना चाहती थी, मरने की इच्छुक थी। मैंने उससे पूछा कि आपको कौन-सा कैंसर है। उसने कहा – "मुझे ब्रेस्ट-कैंसर है।" "आप कुछ इलाज लेते हो।" "जब मैं अस्पताल जाती हूँ तो वहाँ डॉक्टर, नर्सेज़ सभी को गालियाँ देती हूँ, झगड़ती हूँ क्योंकि मुझे कीमोथेरेपी, रेडियेशन नहीं लेना, मुझे मरना ही है।" "आपकी आयु तो अभी बहुत छोटी है और आपको इतना जोरदार कैंसर भी नहीं है, आप चाहो तो बच सकते हो। आपको क्यों मरना है? कोई बात हो तो मुझे बताओ, मैं इस पर अध्ययन कर रही हूँ। मेरे अध्ययन के लिए मैं आपसे दो-तीन प्रश्न पूछूँ?" उसने स्वीकृति दी तो मैंने पूछा – "आपके जीवन में कोई दु:ख है?" "आप जान कर क्या करेंगी?" "नहीं, मुझे जानना है क्योंकि कैंसर से इसका सम्बन्ध होता है।" "मेरे पति का एक लड़की के साथ सम्बन्ध है। मैं पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, वह अब मुझसे प्यार नहीं करता है। चूँकि मैं उसके पैसे से जीवन व्यतीत करती हूँ इसलिए मुझे सहन करना पड़ता है। अब वह उस लड़की को घर में भी लाता है। मुझे ऐसा जीवन नहीं चाहिए, मुझे तो अब मरना है।" "आपको कैंसर कब से है?" "6 मास से कैंसर है और उसके 3 मास पहले से यह सब हो रहा है।" इस सारी बातचीत का निष्कार्ष निकालते हुए मैंने उसको बताया कि मेरे अध्ययन में 95% व्यक्तियों को किसी-न-किसी दु:ख के कारण ही कैंसर हुआ है। उन्हें लगता है कि जीवन में कुछ बचा ही नहीं है, दु:ख होता है तो यह बीमारी होती है। उसने कहा – "जब मेरी सर्जरी हुई थी मेरा पति मुझे देखने भी नहीं आया। मैं बहुत दु:खी हूँ।" मैंने कहा – "आपका पति तो वहाँ झूठा मजा कर रहा है। आपकी क्या ग़लती है इसमें? आपका चरित्र तो अच्छा है। फिर भी आप आत्म-हत्या करने जा रही हैं, क्या यह ठीक है? आपके बच्चों की सम्भाल कौन करेगा?" उसने पूछा – "क्या आप यह कहना चाहती हैं कि उसने मुझे कैंसर दिया है?" "मैं यह नहीं कहना चाहती हूँ परन्तु आप परेशान हो गई हो, उसका निवारण अपनाओ। कैंसर का इलाज कराओ।

प्रभु-मिलन...........पृष्ठ 01 का शेष

वह उसकी माता भी है, उसका शिक्षक और सद्गुरु भी है। आत्मा चिरकाल से उससे बिछुड़ी हुई है। अब अपने उस सर्व सम्बन्धी से मिलन मनाना ही तो योग है। स्वयं ही को शिव अथवा आत्मा ही को परमात्मा मान लेना तो योग का विपरीत भाव है।

परमात्मा के साथ अपना सम्बन्ध मानने से ही उसके प्रति हमारे मन में प्रेम जागृत होता है और प्रेम ही तो मन को मग्न करने एवं जोड़ने का साधन है। अत: हरेक योगाभ्यासी को चाहिए कि वह इस सत्यता का मनन करते हुए इस भाव में लवलीन हो कि परमात्मा हमारा परमप्रिय परमापिता है, वह हमारी ममता-भरी माँ है और वही हमारा परममित्र भी है तथा अविनाशी शिक्षक और सद्गुरु भी। परमात्मा के साथ माता-पिता का सम्बन्ध होने से ही तो हमें उनकी ईश्वरीय सम्पत्ति – पवित्रता और शान्ति आदि की प्राप्ति होगी। उसके साथ शिक्षक-विद्यार्थी का सम्बन्ध जोड़ने से ही तो हमें उससे ईश्वरीय विद्या का लाभ होगा और मार्गदर्शन मिलेगा तथा गति और सद्गति प्राप्त होगी। इन सम्बन्धों के प्यार में पगे रहना तथा इनकी याद का रस लेते रहना ही योग है।

ऐसी परेशानी में मत रहो आप, कुछ करो।" वह बोली – "अभी बात मेरी समझ में आ गई। उसके झूठे मजे का मैं उसको सबक सिखाऊँगी। लेकिन मेरे पास पैसे नहीं हैं।" "सरकार आपको मदद कर सकती है। आप समाजसेवी के पास जाइए, इंतजाम हो जायेगा।" उसकी आँखों में चमक आ गई और बोली– "मैं नौकरी ढूँढूँगी, मुझे कल नौकरी मिल जायेगी।" मैंने कहा – "नौकरी से पहले कीमोथेरेपी और रेडियेशन के लिए अस्पताल जाना है। अगर आप ऐसा नहीं करेंगी तो मैं आपसे बात नहीं करूँगी। जब आप अस्पताल जाओ तो डॉक्टर और नर्सेज़ से माफी माँगना।" दूसरे दिन हमारा बड़ा सार्वजनिक कार्यक्रम था। उसने बोला कि मैं जरूर आऊँगी। जब कार्यक्रम चल रहा था तो मंच के सामने एक बहुत सुंदर महिला सफेद वस्त्र पहने हुए बैठी थी और मेरी तरफ देख कर मुस्करा रही थी। जब लेक्चर पूरा हुआ तो वह मिलने आई। मैंने कहा– "यह क्या परिवर्तन हुआ, कल तो उदास चेहरा था, बाल बिखरे हुए थे, मरना था?" "क्या आप डॉक्टर के पास गई थी?" "हाँ, मैं गई थी। मैंने कहा कि मुझे माफ कर दो। अब मुझे कीमोथेरेपी दीजिए। फिर मैंने अपने पति के बॉस को फोन लगाया और अपना परिचय देते हुए बताया कि मुझे बहुत बड़ा कैंसर है। मैं बड़े-से-बड़े कैंसर डॉक्टर से मिली हूँ। उन्होंने मुझे कहा है कि मेरे पति ने मुझे कैंसर दिया है।" मैंने कहा – "मैंने तो ऐसा कुछ नहीं कहा था। आपने ऐसा क्यों बोला?" वह बोली – "मैंने बॉस को सारी बात बता दी कि मुझे पति से अलग होना है। मुझे तलाक नहीं चाहिए परन्तु अलग रहना है। मैंने उनसे नौकरी माँगी है। कल से काम करना चाहती हूँ। उसने नौकरी दे दी। उसे मालूम हो गया है कि मेरा पति ऐसा करता है। फिर मैं ब्यूटी पार्लर गई। और वहाँ से एक दुकान पर जाकर सफेद कपड़े खरीदे क्योंकि आपने भी सफेद कपड़े पहने हुए हैं ना।" मैंने पूछा – "अभी क्या करोगी?" वह बोली – "अभी मैं अपने बच्चों के साथ अलग हो जाऊँगी। मैं नौकरी करूँगी, अपना कमाऊँगी और कीमोथेरेपी तथा रेडियेशन लूँगी।"

चार साल बाद, मैं फिर फिलीपिन्स गई। वह महिला मुझे लेने के लिए एयरपोर्ट पर आई, एकदम ठीक अवस्था में, एकदम खुशी में, कैंसर नियन्त्रण में था। मैंने पूछा कि आपके पति का आगे क्या हुआ? वह बोली – "हम अभी साथ में रहते हैं। मैंने उसे सबक सिखा दिया है। मैंने कहा कि आप जाओ, मैं भी अपने लिए कोई ढूँढ़ लूँगी। आपको तलाक देकर मैं आपसे अच्छा पति ढूँढ़ लूँगी। इसलिए मैं नौकरी कर रही हूँ। रोज मैं ब्यूटी पार्लर में जाकर मेकअप करके फिर नौकरी पर जाती थी। बड़े अफसर से मिलती थी तो उसको ईर्ष्या होती थी। फिर वो मान गया, मैंने उसे माफ कर दिया, अब हमारा जीवन एकदम ठीक चल रहा है।"

इस घटना से दो बातें स्पष्ट हो गई कि कैंसर का कारण कोई बड़ा मानसिक कष्ट है और दूसरा यह कि जब मनोबल बढ़ता है, आशा जगती है, अपने आधार पर परिस्थितियों को काबू करने का दृढ़ संकल्प आता है तो ग़लत कार्य करने वाला व्यक्ति झुक जाता है, ग़लती छोड़ कर सही मार्ग पर आ जाता है। जब हमें बीमारी होती है तो हम 'सेल्फ पिटी' में आ जाते हैं। दु:खी हो जाते हैं। हम हर बात में बस बीमारी के बारे में सोचते रहते हैं। परिस्थिति में डूब जाते हैं। हमें इससे उबरने की कला सीखनी है और सिखानी है। इससे बहुत-बहुत फायदे हैं क्योंकि यह बात हमें शरीर से अलग होने में मदद करती है। दु:ख से दूर करती है। ▲▲

लेखिका से सम्पर्क : **Dr. Hansa Raval**, 710, Marquis, Sanantonio Texas, **USA - 78216**
E-mail : texas@bkwsu.com

पुरुषोत्तम संगमयुग तथा मूल्यनिष्ठ समाज की रचना

– ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

सृष्टि चक्र में सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग ये चार युग हैं। सतयुग में सतोप्रधान, त्रेता में सतो, द्वापर में रजो और कलियुग में तमोप्रधान आत्माएँ होती हैं। फिर संगमयुग में इन तमोप्रधान मनुष्यात्माओं को सतोप्रधान बनाने का दिव्य कर्त्तव्य परमात्मा करते हैं। इसलिए ही इस युग का नाम संगमयुग है जिसमें पुराना समाप्त होता है और नया कल्प आरम्भ होता है।

भारत अविनाशी खण्ड है तथा अविनाशी होने के कारण सतयुग में सतोप्रधान फिर धीरे-धीरे तमोप्रधान बन जाता है। मूल्यों के आधार पर ही आत्मा को सतोप्रधान या तमोप्रधान कहा जाता है। भारत में 19वीं सदी में भी कितनी सच्चरित्रता थी उसका एक उदाहरण हमारे पास है। भारत की शिक्षा प्रणाली के प्रणेता लॉर्ड मैकॉले (Lord Macaulay) थे। उन्होंने 2 फरवरी, 1835 को ब्रिटिश संसद में अपना प्रवचन किया था जिसमें कहा गया था कि मैंने भारत में चारों ओर परिभ्रमण किया है, वहाँ के लोगों से मैं मिला हूँ तथा उनके नैतिक, आध्यात्मिक तथा मूल्यवान जीवन का मैंने अनुभव किया है। वहाँ मुझे न ही कोई भिखारी मिला और न ही कोई चोर मिला। ऐसी सुन्दर तथा नैतिक शक्ति वाले वहाँ के लोग हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मैं आप सबको यह कह सकता हूँ कि इस भारत देश को जीतना बहुत कठिन है क्योंकि मूल्यों तथा नैतिकता का स्तर बहुत ही ऊँचा है। अगर हमें इसे जीतना है तो इसके मूल्यों को नष्ट करना पड़ेगा। इसके लिए भारत के लोगों का अपनी शिक्षा पद्धति में जो अटूट विश्वास है उसे हमें समाप्त करना होगा। इसके लिए उनकी यह भावना कि विदेश की कोई भी चीज बहुत अच्छी होगी इसका लाभ हम ले सकते हैं। इससे उनकी अपनी शिक्षा प्रणाली में विश्वास कम हो जायेगा जिससे कि उनका चारित्रिक पतन होगा। फिर हम उस देश के ऊपर राज्य कर सकेंगे।

इस प्रकार, जब हमारे मूल्यों का पतन हो जाता है तो हम किसी के भी गुलाम बन सकते हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि इस संगमयुग में हम एक ऐसा अभियान आरम्भ करें जिससे एक मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण हो। सत्यता, धैर्य, मधुरता, सहनशीलता आदि मूल्यों को तो सभी जानते हैं परन्तु उस प्रकार का जीवन बनाने की शक्ति नहीं है। कारण यही है कि उनमें नैतिक बल नहीं रहा है या तो कहें कि उनकी आत्मा अशक्त हो गई है। अशक्त आत्मा इन मूल्यों को जीवन में धारण नहीं कर सकती है। इसके लिए ही दुर्योधन ने महाभारत में कहा है –

जानामि धर्मः न च मे प्रवृत्तिः।
जानामि अधर्मः न च मे निवृत्तिः।।

अर्थात् मैं जानता था कि पाप क्या है परन्तु उस पाप को जीवन से दूर नहीं कर सका। मैं जानता था कि पुण्य क्या है परन्तु उन पुण्यों से अपना जीवन श्रेष्ठ नहीं बना सका। हम यह चाहते हैं कि मनुष्यात्माओं को ऐसी शिक्षा मिले जिसके आधार पर वे अपना जीवन श्रेष्ठ बनाएँ।

परमपिता शिव परमात्मा भी हमें मूल्यों के आधार पर जीवन को श्रेष्ठ बनाने की शिक्षा देते हैं। परमात्मा ने धर्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि जिसके जीवन में धारणा है वही श्रेष्ठ मनुष्य है। देवताओं और मनुष्यों की शारीरिक रचना समान होती है। अन्तर सिर्फ दिव्य गुणों की धारणा का है। देवताओं के जीवन में मूल्यों की धारणा है जिसके कारण उनका जीवन श्रेष्ठ है। संगमयुग ऐसा समय है जिसके अन्दर जीवन मूल्यवान बन सकता है। महात्मा गाँधी जी ने लंदन

से वकालत की डिग्री प्राप्त की। भारत आकर फिर वे दक्षिण अफ्रीका चले गए। वहाँ उन्होंने वकालत शुरू की। धीरे-धीरे उनको मूल्यों तथा आध्यात्मिकता के प्रति आकर्षण हुआ। अन्ततः उन्होंने निश्चय किया कि मैं वकील के रूप में सत्यता की शक्ति का ही प्रयोग करूँगा। परिणामस्वरूप उन्होंने अपने मुवक्किल (क्लाइन्ट, client) को कह दिया कि मैं अब अदालत में सत्य ही बोलूँगा। फिर तो सभी जगह यह आवाज फैल गया। यहाँ तक कि अदालत के न्यायाधीश भी इसके प्रभाव से मुक्त न रह पाए। उनका कहना था कि अगर एम.के. गाँधी ने कहा तो सत्य ही कहा होगा। इस एक सत्यता के गुण के आधार पर उनकी वकालत बहुत बढ़ गई। फिर उन्होंने निश्चय किया कि मैं भारत जाकर वहाँ की जनता की सेवा करूँ। फिर भारत आकर अपनी सत्यता की शक्ति के आधार पर भारत को आजाद करने का पुरुषार्थ किया। हम सब जानते हैं कि उनकी सत्याग्रह तथा अहिंसा की शक्ति के आधार पर भारत आजाद हुआ। इस एक शक्ति के आधार पर गाँधी जी ने कितना कुछ किया ? अगर कुछ और मूल्य भी हम अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारा जीवन कितना श्रेष्ठ बन सकता है। गीता के सोलहवें अध्याय में दैवी संस्कृति तथा दैवी सम्पत्ति का वर्णन है। इसमें 32 गुणों की व्याख्या की गई है जिससे जीवन श्रेष्ठ बन सकता है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का लक्ष्य ही है दैवी स्वराज्य की स्थापना करना। परन्तु स्वर्ग के बारे में भी कई लोगों के मन में भ्रान्तियाँ हैं। कई अन्य शास्त्रों में भी माना गया है कि अनेक प्रकार के नर्क हैं। और इसलिए स्वर्ग और नर्क को कई मानते हैं, कई नहीं भी मानते। भारत के किसी-न-किसी बड़े शहर में दिसम्बर मास में भारतीय इतिहास सम्मेलन (Indian History Conference) होती है। पूणे में आयोजित ऐसी ही कॉन्फ्रेन्स में भ्राता जगदीश जी तथा मैं हिस्सा लेने गए थे। वहाँ चार विषय थे – 1. पूर्व ऐतिहासिक (pre-Historic), 2. ऐतिहासिक (Historic), 3. मुगल पीरियड (Mughal period) तथा 4. ब्रिटिश पीरियड (British period)। हमने प्री हिस्टोरिक पीरियड चुना तथा एक 10 प्रश्न की सूची बनाई। उसमें एक प्रश्न था कि गीता-वर्णित स्वर्ग सत्य है या कल्पना ? कुल 105 विद्वानों को हमने यह फॉर्म भरने के लिए दिया। उपरोक्त के उत्तर में 85% लोगों ने लिखा कि यह एक कल्पना है, सत्य नहीं। इससे हमें यह सीखने को मिला कि जो बात सभी मानें ऐसा कोई प्रश्न तैयार करना चाहिए। विचार चला कि मूल्यों को सभी धर्म मानते हैं। सत्य को सभी धर्म के लोग मानते हैं। हमने विश्व के 10 अलग-अलग धर्मों की संस्थाओं में जाकर, उनका कोर्स करके, उनके फाउण्डेशन में जाकर यही निष्कर्ष निकाला है कि सभी का आधार सनातन सत्य है। अन्तर कर्मकाण्ड में ही आता है। सिद्धान्त सभी के एक हैं। मूल्यों के आधार पर कोई झगड़ा नहीं है परन्तु धर्मों के आधार पर है क्योंकि धर्म अपने-अपने कर्मकाण्ड बनाते हैं। इसलिए ही हम मूल्यनिष्ठ समाज की माँग करते हैं। परमात्मा से हमें मूल्यनिष्ठ समाज की रचना करने की शक्ति मिलती है। इसलिए सतयुग को सिद्ध करने के लिए मूल्यनिष्ठ समाज का उदाहरण रखें। मूल्यों को जीवन में धारण करेंगे तो मूल्यवान जीवन बन जायेगा। दो बातें हैं, कीमत और मूल्य। आज हर चीज़ की कीमत है। हवा, पानी हमारे लिए अमूल्य हैं। लेकिन इनकी भी कीमत है। आज का समाज भौतिकताप्रधान हो गया है। इसे फिर से आध्यात्मिक बनाना पड़ेगा।

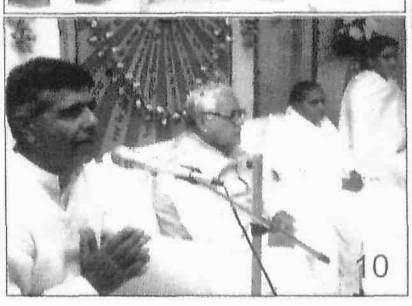
ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : bkatamad1@sancharnet.in Ph. No. 02974- 228125, 228124 theworldrenewal@yahoo.co.in





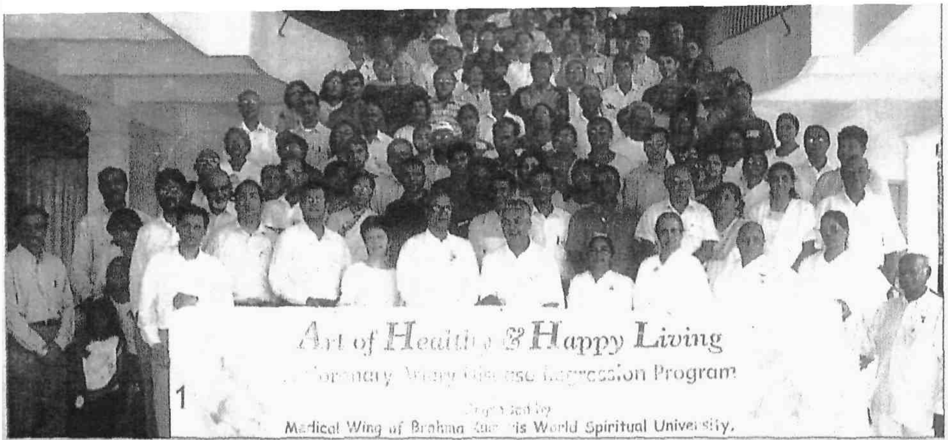






1. दमौली- नेपाल की महिला, बाल-बालिका तथा समाज कल्याण मंत्री बहन दुर्गा श्रेष्ठ, ब्र.कु. शोभा बहन तथा ब्र.कु. कल्पना के साथ ज्ञान-चर्चा के बाद समूह चित्र में । **2. जोधपुर-** राजस्थान के यातायात तथा युवा विभाग के मंत्री भ्राता युनूस खान को ईश्वरीय साहित्य भेंट करती हुई ब्र.कु. शील बहन । **3. कटक (कालेज स्कवायर)-** रामकुमारपुर में उड़ीसा के हरिजन क़ल्याण मंत्री भ्राता बलभद्र मांझी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. कुलदीप तथा ब्र.कु. कुलबीर बहन। **4. गुजरात (छोटा उदयपुर)-** शिव जयन्ती कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय रेल राज्यमंत्री भ्राता नारायण राठवा । साथ में हैं ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन तथा अन्य । **5. जम्मू-** शिव ध्वजारोहण करते हुए समाज कल्याण मंत्री (जे.एण्ड के.) भ्राता मूलाराम, ब्र.कु. सुदर्शन बहन तथा ब्र.कु. निर्मल बहन। **6. मण्डला-** 'विश्व शान्ति भवन' का शुभारम्भ करते हुए केन्द्रीय राज्यमंत्री भ्राता फग्गन सिंह कुलस्ते, नगरपालिका अध्यक्षा बहन राधा गुप्ता, ब्र.कु. ममता बहन तथा ब्र.कु. ओमलता बहन । **7. बल्दवाड़ा (हि.प्र.)-** शिवरात्रि कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हिमाचल के आबकारी एवं कराधान मंत्री भ्राता रंगीला राम राव, ब्र.कु. कृष्णा बहन, ब्र.कु. किरण बहन तथा अन्य । **8. कालियापानी-** उड़ीसा के अर्थमंत्री भ्राता प्रफुल्ल घड़ाई को ईश्वरीय प्रसाद देती हुई ब्र.कु. भारती बहन। **9. भैरहवा-** नेपाल के स्थानीय विकास मंत्री भ्राता खड्क बहादुर जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शान्ति बहन । **10. जालंधर-** शिव जयन्ती कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं दैनिक पंजाब केसरी के मुख्य सम्पादक भ्राता विजय चोपड़ा, ब्र.कु. राज बहन तथा अन्य । **11. छिंदवाड़ा-** अंधकार से प्रकाश की ओर अभियान का उद्घाटन करते हुए म.प्र. के वन मंत्री चौधरी चन्द्रभान सिंह । साथ में हैं नगरपालिका अध्यक्ष भ्राता कन्हईराम रघुवंशी, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा अन्य। **12. कन्याकुमारी-** तमिलनाडू के मंत्री एन. तलवाय सुन्दरम् भाई को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. माला बहन । साथ में हैं ब्र.कु. कोकिला बहन ।













Regd.No. 10563/65,
Postal Regd. No. RJ/
WR/25/12/2003-2005,
Posted at Shantivan-
307510 (Abu Road) on
5-7th of the month.

1. मॉरिशियस- स्वस्थ तथा प्रसन्न जीवन जीने की कला विषय पर आयोजित कार्यक्रम के बाद ब्र.कु. डॉ. सतीश गुप्ता, ब्र.कु. चन्द्रा बहन तथा अन्य समूह चित्र में ।

2. काठमाण्डौ- महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में नारायण हिटी राजदरबार के प्रमुख द्वार पर आयोजित शान्ति और सद्भाव रथयात्रा के उद्घाटन अवसर पर ब्र.कु. राज बहन के साथ उच्च पदस्थ अतिथिगण तथा धर्मगुरु ।

3. पुत्तुर (आ.प्र.)- कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता एस.आर. नायक तथा राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी योग-कक्ष का उद्घाटन करते हुए । साथ में हैं ब्र.कु. रमेश शाह, ऊषा बहन तथा अन्य ।

4. शिमला- शिव ध्वजारोहण अवसर पर उपस्थित हैं हि.प्र. की ऊर्जा मंत्री बहन विद्या स्टॉक्स । ब्र.कु. कृष्णा बहन प्रतिज्ञा कराती हुई।

5. भुवनेश्वर- उड़ीसा की महिला तथा बाल-कल्याण मंत्री बहन प्रमिला मल्लिक का स्वागत करती हुई राजयोगिनी दादी सन्देशी जी ।

6. कोरबा- अंधकार से प्रकाश की ओर अभियान का शुभारम्भ करते हुए छत्तीसगढ़ के कृषि, सहकारी व पशुपालन तथा विधिविधायी मंत्री भ्राता ननकीराम कंवर । साथ में हैं ज़िलाधीश भ्राता गौरव द्विवेदी, प्रेस क्लब कोरबा के अध्यक्ष भ्राता विजय शर्मा, ब्र.कु. राजश्री बहन तथा अन्य ।